



# શ્રી અક્ષર ભારતી

વીરાયતન કી માસિક પત્રિકા

ફરવરી-માર્ચ-2023

વર્ષ-66

અંક-02-03

મૂલ્ય: રૂ. 10/-



વીરાયતન -કચ્છ મેં  
અવિસ્મરણીય ત્રિવેણી મહોત્સવ





**वीरायतन विद्यापीठ, कच्छ के प्रांगण में  
श्रद्धा, भक्ति और प्रेम से सराबोर पूज्य ताई माँ का 87 वां जन्मोत्सव  
अभिनन्दन ! अभिनन्दन !! अभिनन्दन !!!**



# श्री अमर भारती

वीरायतन की मासिक पत्रिका

फरवरी-मार्च-2023

वर्ष: 66

अंक: 02-03

## शुभासंसा

दीन-हीन हिते लीना, ज्ञान-कर्म समन्विता।  
आचार्य सत्पदासीना, चिरं जयतु चन्दन॥।



संस्थापक  
उपाध्यायश्री अमरमुनि



दिशा-निर्देश  
आचार्यश्री चन्दनाश्रीजी

सम्पादक  
साध्वीश्री साधनाजी  
•  
महामंत्री  
नवीन चंद सुचंती

दीन-हीन जनता के हित में  
लीन सदा जो रहती हैं,  
ज्ञान-कर्म की धाराओं में  
सहजभाव से बहती है,  
शासन की महिमा-गरिमा को  
नित्य बढ़ाती जाती है,  
अस्तु चन्दना, जयतु घोषणा  
जन-जन के मुख से पाती है॥।

—उपाध्याय अमरमुनि

This issue of Shri Amar Bharti can be downloaded  
from our website- [www.veerayatan.org](http://www.veerayatan.org)

श्री अमर भारती

01

फरवरी-मार्च- 2023

## अनुक्रमणिका

उद्बोधन	उपाध्याय अमरमुनि	01
प्रार्थना प्रवचन	उपाध्याय अमरमुनि	03
चिरं जीवतु-चिरं जयतु	उपाध्याय साध्वीश्री यशाजी	08
कौन-सा संसार छोड़ना	आचार्य चन्दना	09
बीरायतन के 50 वर्ष	.....	10
प्रश्न पैदा करनेवाला नहीं ....	उपाध्याय साध्वीश्री यशाजी	18
कुमारी झलक जैन- दीक्षार्थी	.....	21
क्षणे क्षणे यन्नवतामुपैति	आचार्य चन्दना	24
कल्याणकारी भी और क्रान्ति	डॉ. अभय फिरोदिया	26
श्री चन्दना विद्यापीठ 'विभूषण' पुरस्कार	.....	31
बीरायतन कच्छ में .....	प्रतिभा बोथरा एवं साध्वी शाश्वत	32
युगदृष्टा : आगामी 50 वर्षों .....	पूज्य भाई श्री- सायला	48
श्रीमद् राजचन्द्र	राकेश जी	50
जन्मदिन की शुभकामना	धीरज मुनि	51
नारी शक्ति .....	कुमारपाल देसाई	52
अंकुर ने लगाई छलांग	आचार्य चन्दना	55



### प्रार्थना - प्रवचन

-उपाध्याय अमरमुनि

प्रार्थना प्राणी की प्रभु के प्रति हार्दिक भक्तिभावना एवं श्रद्धा की पावन अभिव्यक्ति है। यह कितनी सुन्दर परम्परा है कि साधक पहले तो स्वयं प्रभु की प्रार्थना करता है, उनके चरणों में सभक्ति सर्वात्मना समर्पित होता है, और फिर एक वह समय भी आता है, जबकि वह परमात्मा-पद का साधक स्वयं परमात्मा बन जाता है।

प्रस्तुत है श्रद्धेय कविश्रीजी का इस सम्बन्ध में गहन विचार-चिंतन।

-सम्पादक

चमकता है, और चला जाता है तो वह अपने वर्तमान संसार के चित्र पटल से लुप्त हो जाता है।

अब तक धरती पर अनन्त तीर्थकर हो गए, अनन्त चक्रवर्ती और अनन्त वासुदेव बलदेव हो गए, पर इतिहास के पृष्ठों पर उनका आज कोई अता पता नहीं है। वर्तमान चौबीस तीर्थकरों का भी तो कहाँ वर्तमान इतिहास उल्लेख कर पा रहा है? महाकाल की करवट के नीचे बड़े-बड़े महापुरुष दब गये हैं, अतीत की तहों के भीतर समा गए हैं। बहुतों के स्पष्ट तो क्या, धूमिल चित्र भी नहीं मिल पा रहे हैं।  
**व्यक्ति नहीं, गुण :-**

अतएव हमारे आचार्यों ने काल के इस

**“जयति जङ्गम-कल्प मही रुहो  
जयति दुःख महार्णव तारकः  
जयति विश्व सनातन दीपको  
जयति भूतल शीतरुचिर्जिनः॥  
विषय पङ्किल मोह जलोल्लसद  
बहुल राग-तरंग-भराकुले  
विजयते विपुले भवपल्वले  
कमलमेकमहो जिन-पुङ्गवः॥”**

महाकाल के प्रवाह में कुछ भी स्थायी नहीं है। प्रतिक्षण, प्रतिपल परिवर्तन का चक्र चल रहा है। व्यक्ति आता है और चला जाता है। आता है तब कुछ देर के लिए उसका नाम

अजस्त्र-प्रवाह से व्यक्ति को नहीं, गुण को उभारा है। व्यक्ति मिट जाता है, पर उसका व्यक्तित्व अमर रहता है। अतएव भारतीय आचार्य व्यक्ति-पूजा से गुण-पूजा की ओर प्रवृत्त हुए हैं।

उन्होंने कहा है— आत्मा का निर्मल और निर्विकार स्वरूप ही शाश्वत है, अजर-अमर है। उसका जो ज्ञानमय-चिन्मय रूप है, ज्ञान का जो अखण्ड दीप है, वह महाकाल के झङ्घावातों से भी बुझ नहीं सकता। अनन्त काल पूर्व होने वाले तीर्थकरों का जो यह आध्यन्तर रूप था, वही वर्तमान चौबीसी के तीर्थकरों का था, और वही आध्यन्तर रूप अनागत में होनेवाले समस्त अनन्त तीर्थकरों का होगा। उनके खानदान, वंश, जाति, नाम-धाम, शरीर के रंगरूप और चिह्न भिन्न-भिन्न प्रकार के हो सकते हैं, किन्तु उनकी आत्मा का रूप एक ही प्रकार का होता है। उनके आन्तरिक रूप में कोई अन्तर नहीं पड़ता। अतएव आचार्यों ने जो स्तुतियाँ, प्रार्थनाएँ की हैं, वे व्यक्ति की नहीं अपितु गुणों की हैं। व्यक्ति विशेष के नाम-रूप पर वे मुाध नहीं हुए हैं, अपितु उसकी आध्यन्तर-आत्मा के अनन्त सौन्दर्य पर निछावर हुए हैं।

व्यक्ति के नाम का मूल्य, कुछ है तो, बस वह कुछ समय के लिए हो सकता है, इतिहास के लम्बे पन्नों पर उसका कुछ भी मूल्य नहीं रह पाता।

उपर्युक्त श्लोकों में जो स्तुति की गई है वह किसी तीर्थकर विशेष के नाम पर नहीं की गई है, अपितु उनके सार्वदेशिक एवं सार्वकालिक उज्ज्वल, उदात्त आध्यन्तर रूप की स्तुति की गई है।

#### चलते-फिरते कल्पतरु :-

स्तुति केवल वाग्-विलास नहीं होती, उसमें सिर्फ शब्दों का जोड़तोड़ या अलंकारों का चमत्कार मात्र ही नहीं होता, उसमें आत्मा का उदात्त स्वर गुंथा रहता है। उसमें हृदय का जोड़तोड़ एवं भावों का चमत्कार भरा रहता है। आत्मा की अतल गहराई से उठने वाली श्रद्धा एवं भक्ति की लहरों में भाव-विभोर भक्त हृदय कहता है— “जयति जङ्गम कल्प मही रुहो” —प्रभु! आप जंगम कल्प वृक्ष हैं। जंगम यानि चलते-फिरते। स्थावर जड़ कल्पवृक्ष मनुष्य की भौतिक आशाएँ भले ही पूरी कर दें, पर वे एक ही जगह खड़े रहते हैं, इधर-उधर नहीं आ-जा सकते। किन्तु धरती पर के महामानव तो इस भूतल पर चलते-फिरते कल्पवृक्ष हैं। कल्प- यानि इच्छाएँ, उनको पूर्ण करने वाले हैं। संसार के प्राणियों की आशाएँ, कामनाएँ प्रभु की स्तुति और सेवा से पूर्ण होती हैं। जिसका तन-मन भगवान् के चरणों में लीन हो गया, उनके गुणों में तन्मय हो गया, उसे संसार का महानतम वैभव प्राप्त हो गया। उसकी सब कामनाएँ-इच्छाएँ-अभिलाषाएँ पूर्ण हो गई।

#### दुःख-सागर के तारक :-

संसार दुःखों का समुद्र है। इसमें संघर्ष, कलह, कष्ट एवं परस्पर के विग्रह का अपार खारा जल भरा रहता है, आसक्ति एवं लालसाओं की उद्धाम तरंगें उछलती रहती हैं। आत्मा इस अतल गहराई में डूबी रहती है। दुःख और पीड़ाओं के थपेड़े खाती रहती है। कष्टों के तूफानों से टकराती रहती है, पर कहीं किनारा दिखाई नहीं देता। जिस ओर जाए उधर ही दुःखों की अपार जलराशि लहराती दिखाई देती है। उसे कोई सहारा नहीं, कोई किनारा नहीं। उस दुःखी संत्रस्त आत्मा को दुःखों के इस महासागर से तारने वाला यदि कोई है, तो हे प्रभु, आप ही हैं। आपके प्रवचन, आपके उपदेश ही तो उस विराट जलपोत के समान हैं, जो संसार-सागर में डूबते हुए प्राणियों को पार लगा सकते हैं।

#### कभी न बुझने वाला दीप :-

और वह कभी नहीं बुझने वाला सनातन दीप कौन है? हे प्रभु, आप ही तो हैं। आपने अपने अंतर में जो ज्ञान का महादीपक जलाया है, वह संसारी हवाओं के तूफानी झांकों से कभी बुझ नहीं सकता, रात-दिन का अनन्त काल चक्र उसके प्रकाश एवं प्रभामंडल को क्षीण नहीं कर सकता। वह एकरस निरंतर जलता रहता है, अखण्ड रूप में प्रकाश फैलाता रहता है। और जो उसके प्रकाश से प्रकाशित हो गया, स्वयं को पहचान लिया, भूल कर आहादित हो उठता है।

उस मुमुक्षु आत्मा का भी अन्तर दीपक जल उठा। इस प्रकार आपके इस सनातन ज्ञान दीपक से हजारों-लाखों ही दीप जल उठते हैं। सब ओर प्रकाश ही प्रकाश फैल जाता है।

#### धरती पर के चाँद :-

आकाश में जो यह चाँद के रूप में एक प्रकाश का टुकड़ा दिखाई देता है, वह तो क्या है आपके सामने प्रभो? वह कभी क्षीण होता है, कभी बढ़ता है। उसकी कलाएँ भी घटती-बढ़ती रहती हैं। अमावस्या की काली रात में तो आकाश मण्डल में उसका कहीं कोई चिह्न ही नहीं दिखाई देता। दिन के समय में वह ढाक के सूखे पत्ते जैसा हो जाता है। उसकी ज्योत्स्ना और शीतलता भी सिर्फ रात भर रहकर प्रातः होते ही धरती से अपनी चादर समेट कर विदा हो जाती है। ग्रहण के समय तो वह काला कपाल हो जाता है। अतः इस धरती के सच्चे चाँद तो आप हैं। आपके ज्ञान की ज्योत्स्ना कितनी शुभ्र और निर्मल है। कभी क्षीण नहीं होती। वह दीप एक बार प्रदीप्त हो गया तो अनन्त काल तक संसार को ज्योतित करता रहता है। रात में भी और दिन में भी। न उसको राहु ग्रस सकता है, न सूर्य उसके प्रभापुंज को क्षीण कर सकता है। शीतलता भी ऐसी कि भव ताप के दुःखों व संघर्षों की अग्नि से संतप्त व्यक्ति को जब आपके ज्ञान-चन्द्र की शीतल किरणों का जीवन में अन्तःस्पर्श होता है तो वह सब ताप-संताप भूल कर आहादित हो उठता है।

## एक अद्भुत कमल :-

प्रभु-स्तुति में इस प्रकार भाव-विभोर होकर प्रार्थना करता हुआ भक्त अन्त में कहता है— “विषय पङ्क्तिल मोह जलोल्लसद्” यह संसार एक ऐसी झील है जिसमें विषय-कषाय का कीचड़ भरा है। मोह का जल ठाठें मार रहा है। राग-द्वेष की तरंगें उछल रही हैं।

राग-द्वेष की तरंगें बड़ी भयानक हैं। स्वजन, स्वधन और स्वतन के राग का महान् भंवर है, समुद्र में उठने वाला जल का चक्र है, जो बड़े-बड़े जहाजों को भी डुबो देता है।

स्वजन की सीमाओं में विराट् आत्मा बंध जाती है। यह विकल्प उठ खड़ा होता है कि यह मेरा है, मेरे जाति या वंश का है, मेरी परम्परा और मेरे संप्रदाय का है यह स्व-पर की कल्पना, ऊपर से बड़ी मधुर लगती है, पर, वास्तव में है बहुत ही कटु। जितने भी दुःख हैं, संघर्ष हैं, सब पर को स्व मानने से उत्पन्न होते हैं। और स्व पर का भेद करने के कारण चेतन चेतन के बीच में भी जब द्वैत बुद्धि जन्म लेती है, अपना-पराया का भेद उठता है, तो दुःख की परम्परा का वह सूत्रपात हो जाता है, जिसकी समाप्ति सहज नहीं रहती।

स्व-धन की भावना भी कम भयानक नहीं है। धन का मोह मनुष्य को पागल बना देता है। उसकी आँखें बन्द हो जाती हैं। आत्मा में ममत्व का दावानल जल उठता है। ‘मेरा धन, मेरी सम्पत्ति’ का कोलाहल अन्तर्मन को

उद्भेदित कर देता है। व्यक्ति धन पर साँप की तरह फन फैलाकर बैठ जाता है। कोई उसे हाथ लगाए, उसकी तरफ नजर भी उठाले तो वह उसे काटने दौड़ता है, फुंकार मारता है। धन का लोभी मानव यह नहीं समझता है कि धन से सुख नहीं प्राप्त होता। उससे तो देर-सबेर दुःखों पीड़ाओं और यातनाओं की ज्वालाएँ ही उठेंगी। उसी ज्वाला में आत्मा जलती रहती है।

तीसरा भँवर-जल है स्व-तन का। स्व-तन का व्यामोह मनुष्य को इतना भटकाता है कि कुछ पूछिए नहीं। अपने तन की सुख-सुविधाओं के लिए वह दिन-रात दौड़-धूप करता है, संघर्ष करता है। दूसरों के सुखों को लूट कर भी अपने तन का सुख प्राप्त करना चाहता है। अपने तन को मूल्यवान समझता है, फूलों-सा कोमल समझता है इसके सामने दूसरे हजारों-लाखों तन की कोई कीमत ही नहीं समझता। उन्हें तो लोहे और पत्थर के बने समझता है कि उन्हें क्या पीड़ा होती है? जो भी पीड़ा होती है, मुझे ही होती है। स्व-तन का यह व्यामोह अनर्गल संघर्ष और द्वन्द्वों की जड़ है। अनादि काल से यह संसार स्व-जन, स्व-धन और स्व-तन के इन्हीं आधातों से त्रस्त होता आ रहा है।

इस संसार रूपी सीमाहीन झील में प्रभु को एक कमल, अद्भुत कमल के रूप में देखते हुए स्तुति के अन्त में कहा है— “कमल मेकमहो जिन पुङ्क्वः” हे प्रभु, आप अपने

ढंग के एक मात्र कमल हो।

कमल कीचड़ में जन्म लेता है। कीचड़ में कीड़े कुलबुलाते रहते हैं, मच्छर और मक्खी मंडराते रहते हैं। कीचड़ का रंग काला होता है, दाग लग जाता है तो कपड़े गन्दे हो जाते हैं। सड़ता है, तो बदबू देता है, इस प्रकार जो कीचड़ संसार में मृत्यु और गंदगी बांटता रहता है, उसी में कमल पैदा होता है। पर वह कमल कितना अद्भुत होता है। न उसमें कीचड़ की गन्दगी, न बदबू। कितना मोहक, नयनाभिराम रूप होता है, कितनी मधुर सुगन्ध होती है उसमें और कितना पवित्र होता है वह। निर्लिप्त वीतराग आत्माएँ भी संसार रूपी झील में ऐसे ही निर्लिप्त कमल हैं।

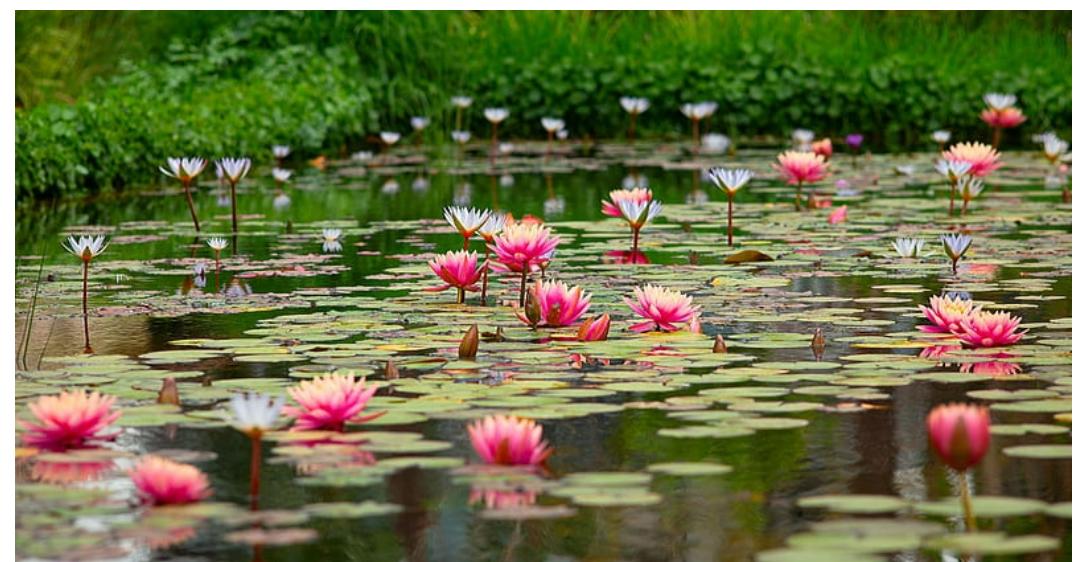
आत्मा की दृष्टि से तीर्थकर की आत्मा और हमारी आत्मा में कोई अन्तर नहीं होता। चैतन्य की दृष्टि से दोनों समान हैं। पर,

वह कीचड़ में जन्म लेकर कमल की तरह निर्मल पवित्र और सद्गुणों के सौरभ से महकता रहता है। दया, करुणा, सद्भाव, निष्कामता की सुगन्ध संसार को अर्पण करता रहता है। उसी कमल का आदर्श सामने रखकर हमारी भावनाएँ उस ओर उन्मुख होती हैं। श्रद्धा और भक्ति का सम्बल लेकर उस आदर्श की ओर बढ़ने के लिए प्रार्थनाएँ हुआ करती हैं। इस प्रार्थना से आत्मा के सामने अपना जीवन-लक्ष्य स्पष्ट हो जाता है। साथ ही उस ओर बढ़ने का अजेय बल भी प्राप्त होता है।

**“न लिप्वं भवमज्ज्ञे वि संतो,  
जलेण वा पोक्खरणी-पलासं।”**

**— भगवान् महावीर**

संसार में रहते हुए भी वीतराग आत्माएँ जल में कमल के समान निर्लिप्त होती हैं।





## चिरं जीवतु - चिरं जयतु

- उपाध्याय साध्वीश्री यशाजी

परम श्रद्धेय, परम पूज्य, परम आदरणीय परम-परम कहते हुए डिक्षानरी के सारे शब्द समाप्त हो जायेंगे लेकिन भावों की उर्मिया उमड़-घुमड़ कर उठती ही रहेंगी। ऐसे हमारे परम ताई माँ के चरणों में पूर्ण समर्पण के साथ आज जन्म कल्याणक के दिन बन्दनानुबन्दन।

कल्याणक का अर्थ है कल्याण करनेवाला। आचार्य भद्रबाहु ने भगवान महावीर के लिए जैसे कहा था कि उनके जन्म के समय सारे उच्च ग्रह, शुभ ग्रह उच्च स्थान पर थे। मैं विनम्रभाव से आचार्य भद्रबाहु के आगे एक पंक्ति और लिखना चाहती हूँ कि आज ताई माँ के जन्मदिन पर हम सबके शुभ ग्रह उच्च स्थान पर हैं। जिससे हमें आज ताई माँ का सान्निध्य प्राप्त हुआ है, आशीर्वाद प्राप्त हुए हैं। उनकी छत्रछाया प्राप्त हुई है।

ताई का अर्थ आगम की भाषा में त्राता

अर्थात् रक्षक है। हमारा परम सौभाग्य है कि ऐसे ताई माँ के एक छत्र तले हम आये हैं। और मैं कहना चाहुंगी कि न यह अतिशयोक्ति है, न भावुकता है बल्कि वास्तविकता है कि जैसे भगवान महावीर का जीवन है वीतरागता का, शुद्ध, पूर्ण, चैतन्य स्वरूप, स्फटिकरत्न के समान। उस स्वरूप के जब दर्शन होते हैं तब ताई माँ! आपके दर्शन होते हैं। और जब आपके दर्शन करते हैं तो महावीर के दर्शन होते हैं।

आज का ही वह मंगलमय दिन है वसन्त पंचमी का, जिस दिन ताई माँ 12 वर्ष की उम्र में पूज्य गुरु मां साध्वीश्री सुमति कुंवरजी के चरणों में आये थे। और तब से ज्ञान साधना और तपःसाधना में लीन हुए। मौन साधना के साथ जैन, बौद्ध, वैदिक सभी धर्मों और दर्शनों का अध्ययन किया। आत्मा की पवित्रता के साथ सत्साहस के दीप प्रज्वलित किये। उस समय की असामाजिक तत्त्वों की

बहुलता भरी बिहार की भूमि में जो कि ढाई हजार वर्ष पूर्व की प्रभु महावीर की समवसरण भूमि रही है वहाँ पुनः महावीर के अहिंसा और मैत्री के संदेश को जागृत किया।

और यही वह 26 जनवरी है जब 2001 में कच्छ में दिल दहलानेवाला भयंकर भूकम्प आया तब ताई माँ तत्काल कच्छ में पधारे और उन आसुओं से भींगी हुई दर्दभरी भूमि को नन्दनवन में रूपान्तरित किया। हजारों विद्यार्थियों को शिक्षा दी है, लाखों युवाओं को जीवन जीने की कला प्रदान की है। भगवान

महावीर के शब्दों में कहे तो आप “समाहि उप्पायगा” आप समाधि उत्पादक है आपने जो दिया है वह अनुपमेय है। आपके प्रति पूज्य गुरुदेव उपाध्याय श्री अमरमुनिजी महाराज के जो आशीर्वाद है, उन्हें सबकी भावनाओं के साथ दुहराउंगी—

**“चिरं जीवतु कल्याणी,  
चिरं जयतु कल्याणी”**

आप चिरकाल तक जीवित रहे। आप चिरकाल तक जयवन्त रहे।

## कौन-सा संसार छोड़ना वैराग्य ?

-आचार्य चन्दना

जब व्यक्ति वैराग्य की भाषा में संसार छोड़ने की बात कहता है, तब क्या छोड़ता है वह? अशन, वसन और भोजन इनमें से क्या छोड़ सकता है वह? अगर इन्हें भी छोड़ दे फिर भी तन और मन को वह कैसे छोड़ सकता है? इस भूमि और आकाश का केसे परित्याग कर सकता है? तब फिर उसने क्या छोड़ा? वैराग्य की भाषा में यह कहा जाता है कि वैराग्यशील ज्ञानी ने संसार को छोड़ दिया, किन्तु इस छोड़ने का क्या अर्थ है? वही शरीर रहा, वस्त्र भी, भले ही उन वस्त्रों की बनावट में कुछ परिवर्तन हो। एक गृहस्थ की वेशभूषा के स्थान पर एक साधु का वेष आ गया हो। शरीर पोषण के लिए वही भोजन, वही जल, वही वायु। तब संसार छोड़ने का क्या अर्थ हुआ? अध्यात्म की भाषा में यह कहा जाता है कि वैषयिक आकांक्षाओं, कामनाओं और इच्छाओं का हृदय में जो अनन्तकाल से आवास है, वस्तुतः वही संसार है, वही बन्धन हैं उस आकांक्षा का और वासना का परित्याग ही सच्चा वैराग्य है। कामनाओं की दासता से मुक्त होना ही संसार से मुक्त होना हैं अध्यात्म दर्शन साधक को जगत् से भागने की शिक्षा नहीं देता, वह तो कहता है कि तुम कर्मजन्य भोग में रहकर भी भोग के विकारों और विकल्पों के बन्धन से मुक्त होकर रहो। यही जीवन की सबसे बड़ी साधना हैं। संसार में रहो किन्तु संसार को अपने अन्दर मत रखो। यही दीक्षा है।



हर साधक का लक्ष्य है आत्मविकास। जिसके तीन चरण हैं- अहिंसा, करुणा और मैत्री। अहिंसा अर्थात् अशुभ का निवारण, पाप का निषेध, हिंसा से निवृति- यह प्रथम चरण। द्वितीय चरण है अनुकम्पा या करुणा अर्थात् शुभ का विधान, शुभ में प्रवृत्ति। और तीसरा चरण है मैत्री- शुभ का विस्तार।

**वस्तुतः:** निवृत्ति और प्रवृत्ति ये दोनों अलग नहीं हैं। दोनों का एक अखण्ड रूप है अहिंसा।

लेकिन प्रभु महावीर की अहिंसा का यह विराट रूप समय के साथ सिकुड़ता गया। और मात्र निवृत्ति में ही अहिंसा की मान्यता बद्धमूल हो गयी। दूसरा चरण उपेक्षित हो गया।

फिर भी सौभाग्य है हमारा कि आचार्यों की सुदीर्घ परम्परा में अनेक ऐसे प्रभावक आचार्य हुए हैं जिन्होंने गुफा, मन्दिर, मूर्ति आदि के चिरजीवी स्थापत्य द्वारा प्रवृत्तिमूलक अहिंसा को उजागर किया। और प्रभु के जनहितकारी संदेश को प्रवाहित रखा।

इसी प्रवाह को और अधिक गति देने के लिए आचार्य श्री ताई मां का एक विनम्र प्रयास है। उनका चिन्तन है कि तीर्थकर महावीर ने कैवल्य प्राप्ति के बाद गांव-गांव घूमकर जनता को करुणा और मैत्री का बोध दिया। संघ की स्थापना की, अनुकम्पा को सम्यक्त्व का लक्षण बताया और रोगी की सेवा को उन्होंने ऊंचा स्थान देते हुए तप बताया।

इसी परिप्रेक्ष्य में पूज्य ताई मां का निर्णय है कि जब दीक्षित वर्ग सेवा का उपदेश दे सकता है तो वह स्वयं भी सेवा कर सकता है।

इस चिन्तन के साथ उन्होंने “सक्रिय सेवा” (Compassion in action) का मार्ग चुना। और इस मार्ग को उन्होंने बड़ा ही अर्थगंभीर अश्रुतपूर्व और अभूतपूर्व नाम दिया- ‘वीरायतन’ जिसका अर्थ है महावीर का समवसरण अर्थात् महावीर की त्रिपथगा करुणा का प्रवाह।

पूज्य ताई मां के इस नये मार्ग एवं नई

दिशा को राष्ट्रसन्त पूज्य गुरुदेव उपाध्याय श्री अमरमुनिजी महाराज ने संरक्षण, समर्थन एवं आशीर्वाद दिये। और ताई मां निकल पड़े तीर्थकर महावीर की पावन भूमि की ओर।

प्रभु की उस धन्यधरा पर अभाव, अशिक्षा, उत्पीड़न और दरिद्रता देख विचलित हो उठे पूज्य ताई मां। वह बिहार जो तीर्थकरों की पावनभूमि रही है, उस गैरवशाली अतीत और समृद्ध प्रदेश की जनता विषमताओं से भरा जीवन जी रही है यह देखकर उन्होंने निश्चय किया कि बिहार के उस गैरव को पुनः स्थापित करना है। और उन्होंने तय कर लिया कि वीरायतन का कार्य बिहार की धरती से प्रारम्भ होगा।



पूज्य श्री रम्भाकुंवरजी महाराज, पूज्य श्री सुमतिकुंवरजी महाराज एवं श्रीमती प्रेमकुंवर कटारिया के आशीर्वाद से सन् 1973 में राजगीर बिहार में वीरायतन का कार्य प्रारम्भ हुआ।

मार्ग नया था, मुश्किलों से भरा था। श्री ताई मां बिना रुके, बिना थके, हर चुनौती

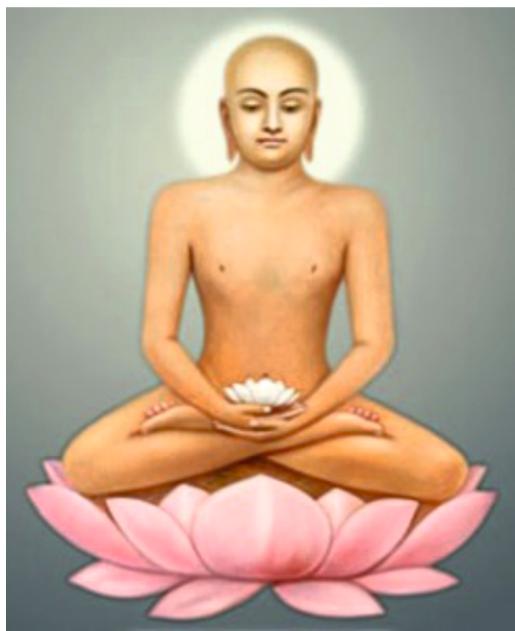


का सामना करते हुए आगे बढ़ते रहे। उनके इस क्रान्तिकारी कार्य को दृढ़ता के साथ समर्थन एवं अनन्य सहयोग दिया श्री नवलमल फिरोदिया (आदरणीय बाबा) ने।

केवल तीर्थभूमि में ही नहीं, देश में करोड़ों लोग हैं जो अभाव में, अशिक्षा में, पीड़ा में जी रहे हैं। हाथ फैलाएं खड़े हैं।

तीर्थकर महावीर ने आत्ममंगल के साथ ‘मेतिं भूएसु कप्पए’ का सर्वमंगल संदेश दिया है। इसी संदेश को लेकर पूज्य ताई मां बाढ़ पीड़ित, भूकम्पग्रस्त, प्राकृतिक आपदाओं से त्रस्त एवं असहाय जनता के बीच पहुंचकर उनके साथ खड़े रहे, उनके आंसुओं को पोंछने का कार्य किया अपने साध्वी संघ के साथ स्वयं जाकर सेवाकार्य के द्वारा प्रभु की करुणा





का प्रकाश पहुंचाया है।

लोग कष्ट में हो, त्राहि-त्राहि कर रहे हो ऐसे समय में स्वयं अगर प्रभु महावीर होते तो क्या वे हमें आंख बंद करके ध्यान करने का संदेश देते? या उनकी अनन्त करुणा का प्रवाह प्रवाहित हो जाता?

ढाई हजार वर्षों से उनकी करुणागंगा बहती चली आ रही है जो हम तक पहुंची है। उसे आगे से आगे प्रवाहित रखना है हमें। इसी संकल्प को लेकर ताई मां दृढ़ कदमों से आगे बढ़ते रहे।

मनुष्य जाति का सौभाग्य रहा कि श्री ताई मां ने वज्र संकल्प के साथ काम किया और उस कार्य को न

सिर्फ समाज ने ही साथ दिया बल्कि उनके साध्वी संघ ने भी दृढ़तापूर्वक साथ दिया। यही कारण है कि वीरायतन का इतना व्यापक विस्तार हो सका।

उनके इस करुणापूर्ण कार्य ने न केवल लाखों लोगों को जीवन जीने की सही राह दिखाई बल्कि अपनी नई सोच, सत्साहस एवं दूरदर्शिता पूर्वक तथा समयोचित महत्वपूर्ण परिवर्तन किया। और दीक्षित वर्ग के हाथ में भी रचनात्मक कार्य देकर जैन समाज को नई दिशा दी। तथा प्रभु महावीर की करुणागंगा को दूर-दूर तक प्रवाहित किया।

आज सेवा, शिक्षा और साधना के उद्देश्य के साथ पूज्य ताई मां का समर्पित तेजस्वी साध्वी संघ उनके आशीर्वाद और प्रेरणा से निष्वार्थ भाव से रचनात्मक कार्यों द्वारा देश-विदेश में अहिंसा, मैत्री, करुणा और प्रेम के संदेश की सुगंध को फैलाने का पुनीत कार्य कर रहा है।



इस प्रकार ताई मां ने स्वकल्याण के साथ जन कल्याण का मार्ग प्रशस्त कर जैन इतिहास में एक नये अध्याय का प्रारम्भ किया है। यही कारण है कि 2600 वर्ष की परम्परा में प्रथम बार एक साध्वी को आचार्य पद पर प्रतिष्ठित किया गया। और प्रथम बार ही भारत सरकार द्वारा एक जैन साध्वी को 'पद्मश्री' 'पुरस्कार से सम्मानित किया गया। वह साध्वी है- 'पद्मश्री' डॉ. आचार्य चन्दनाश्रीजी। ये दोनों ही सम्मानित पद उन्हें उनके जन्मदिन 26 जनवरी को प्राप्त हुए हैं। आचार्य पद 1987 में एवं पद्मश्री 2022 में। इसी तरह पूज्य ताई मां



अनेक राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय पुरस्कारों से सम्मानित है।

[ साधना के मार्ग पर चलते हुए सक्रिय सेवा कार्य का सूत्रपात करनेवाले श्री ताई मां का विलक्षण जीवन.... ]

बचपन से ही शकुन्तला अनूठी थी। करुणा उसका जन्मजात गुण था। दूसरों की मदद करना उसका सहज स्वभाव था। जिज्ञासु मेधावी सबके प्रति असीम स्नेह रखनेवाली संवेदनशील बालिका शकुन्तला सबसे अलग थी। उन विलक्षण गुणों ने शकुन्तला के लिए दीक्षा का मार्ग प्रशस्त किया। और 15 वर्ष की आयु में शकुन्तला ने साध्वी चन्दना के रूप में दीक्षित जीवन प्रारम्भ किया।

सत्य को जानने के लिए दीक्षा के बाद 12 वर्ष तक मौन साधना के साथ व्याकरण, साहित्य, दर्शन, न्याय तथा विभिन्न धर्मग्रन्थों का गहन अध्ययन किया। लेकिन सत्य प्राप्ति में यह अध्ययन समाधान न दे सका। बाहर मौन था परन्तु अन्तस में प्रश्नों का अंबार था। धर्म क्या शब्दों में है या धर्म जीवन की अनुभूति एवं प्रवृत्ति में है? अगर धर्म प्रवृत्ति और व्यवहार में है तो दीक्षित वर्ग दुःख से पीड़ित जनता के दुःखमुक्ति के लिए प्रयत्नशील क्यों नहीं? दीक्षित जीवन मात्र आत्मकल्याण के लिए ही स्वकेन्द्रित क्यों है? आखिर इन प्रश्नों का समाधान ताई मां ने 'सक्रिय सेवा' के मार्ग में खोज लिया।



और श्री ताई मां प्रभु की पावन धरा पर प्रभु के चरणों में, प्रभु की वाणी को साकार करने में जुट गये। अज्ञानता और कुपोषण के कारण आंखों की बीमारियों से पीड़ित बिहार की जनता के लिए नेत्र चिकित्सा से उन्होंने जनकल्याण के कार्यों का प्रारम्भ किया। टेन्डों से प्रारम्भ हुआ नेत्र शिविरों का कार्य आज अत्याधुनिक सुविधाओं से सम्पन्न विशाल आई हॉस्पिटल 'नेत्र ज्योति सेवा मन्दिरम्' में परिवर्तित हो गया है। जहां प्रतिवर्ष 15000 आंखों के अँपरेशन और 2,00,000 मरीजों की चिकित्सा होती है। एवं दन्त चिकित्सा होती है। मोबाइल वैन द्वारा गांव-गांव में पहुंचकर लोगों को शाकाहार एवं स्वच्छता के प्रति जागरूक करके उनका निःशुल्क इलाज



किया जाता है।

इसी प्रकार गुजरात के तीर्थक्षेत्र पालीताना में विभिन्न सुविधाओं से सम्पन्न एक मॉडर्न आई हॉस्पिटल 'श्री आदिनाथ नेत्रालय' कार्यरत है। जहां स्थानीय जनता के लिए अत्याधुनिक साधनों द्वारा उपचार एवं ऑपरेशन का समुचित प्रबन्ध है।

श्री ताई मां की करुणा एक मजबूत संबल बनकर क्षेत्र और स्थान की सीमाओं से परे पहुंची है। प्राकृतिक आपदाओं में... फिर चाहे वह विनाशकारी भूकंप हो, सुनामी हो, बाढ़ हो, अकाल या कोविड-19 महामारी हो! बिना किसी भेदभाव के जनसाधारण एवं पीड़ित लोगों की सहायता के लिए वीरायतन हमेशा तत्पर रहा है। वर्ष 2001 में कच्छ के दिल दहला देने वाले भूकंप में आर्थिक, शारीरिक और मानसिक रूप से टूटे हुए लोगों का सशक्त आधार बनकर हजारों दिलों में नई आशा का संचार किया है वीरायतन ने।

2015 में नेपाल के भूकंप के समय में तत्कालीन मदद और वीरायतन रिहैबिलिटेशन



तथा वोकेशनल सेंटर की स्थापना कर ताई मां ने नया कीर्तिमान स्थापित किया। कोविड-19 के दौरान भी वीरायतन संस्था ने हजारों लोगों की मदद की। भोजन सामग्री, दवाएं, सैनिटाइजर्स, मास्क इत्यादि के वितरण के साथ ऑक्सीजन प्लांट भी लगाए गए तथा कोविड-19 महामारी में अपने माता-पिता को खो चुके बच्चों की शिक्षा एवं समुचित देखभाल का पूरा दायित्व लेने के लिए संकल्प बढ़ हुआ है वीरायतन!

गत 50 वर्षों में शिक्षा के क्षेत्र में ताई मां का विशिष्ट योगदान रहा है। बिहार, कच्छ, पालिताना, राजस्थान, नेपाल आदि क्षेत्रों में स्थापित शिक्षण संस्थानों द्वारा हजारों बच्चों और युवाओं के सुनहरे भविष्य के सपनों को पूरा करने का प्रशंसनीय कार्य हो रहा है। बिहार में भगवान महावीर की जन्म भूमि- लिछुवाड़, निर्वाण भूमि-पावापुरी एवं उपदेश स्थली राजगीर में संचालित विद्यालयों के कारण स्थानीय परिवारों के बच्चों के संस्कारों में

उल्लेखनीय परिवर्तन हो रहा है।

दलित एवं पिछड़ी मूषहर जाति के बच्चों को संस्कारित करने के लिए ताई मां ने पावापुरी में हरिकेशीय स्कूल की स्थापना की है जिससे इन बच्चों के जीवन में सकारात्मक परिवर्तन हो रहा है। पावापुरी में ही स्थित वीरायतन B.Ed. कॉलेज में भावी शिक्षकों को आधुनिक विषयों के साथ-साथ बच्चों में उच्च मानवीय मूल्य स्थापित करने के लिए विशेष प्रशिक्षण दिया जा रहा है।

2001 के दर्दनाक भूकंप के पश्चात वीरायतन ने कच्छ में अनेक सुंदर शैक्षणिक संकुलों का निर्माण किया है। आधुनिक सुविधाओं से युक्त हॉस्टल, लाइब्रेरी, लैबोरेट्री, स्पोर्ट्स कांप्लेक्स, ऑडिटोरियम, भोजनालय आदि छात्रों के सर्वांगीण विकास में महत्वपूर्ण योगदान दे रहे हैं। सोलर प्लांट तथा लाखों वृक्षों द्वारा पर्यावरण संरक्षण वीरायतन- कच्छ कैपेसी की विशिष्ट पहचान है।

कच्छ की सूखी धरती पर नदनवन...

आदर्श ज्ञान मंदिर... मूल्यनिष्ठ शिक्षण द्वारा बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिए संकल्पबद्ध जखनिया स्कूल आज हजारों बच्चों के लिए प्रेरणा का केंद्र है। प्राचीन गुरुकुलों की याद दिलाता पूर्णतः निःशुल्क वीरायतन विद्यापीठ- रुद्राणी...

यहां वे बच्चे पढ़ते हैं जहां पीढ़ियों से शिक्षा का अभाव रहा है और वीरायतन ले आया है उनके जीवन में ओजस्वी शिक्षा की किरण!

वीरायतन कच्छ में टेक्निकल इंस्टिट्यूट लाने के लिए pioneer है। यहां बने State of the Art फार्मेसी, इंजीनियरिंग, BBA तथा BCA कॉलेज मात्र कॉलेज नहीं हैं, ऐसे विद्यार्थियों के लिए सुनहरे भविष्य के लिए आशा का केंद्र हैं, जो उच्च शिक्षा का स्वप्न भी नहीं देख सकते...

आज वे वीरायतन के सहयोग से उत्तम शिक्षा प्राप्त कर सफलता की ऊंचाइयों को छू रहे हैं।

पूज्य ताई मां द्वारा उद्घोषित परियोजना 'जहां जिनालय वहां विद्यालय' के अंतर्गत पालीताना, ओसियाजी, सांचौर, जयपुर



श्री अमर भारती

इत्यादि क्षेत्रों में विद्यार्थियों के समुचित विकास के लिए सुंदर विद्यालय संचालित हैं। गुजरात के प्रसिद्ध तीर्थ क्षेत्र पालीताना में स्थापित 'तीर्थकर महावीर विद्या मंदिर' डोली वाला और भील जाति के बच्चों के लिए वरदान स्वरूप बन गया है।



तीर्थकर महावीर के विश्व-मैत्री के दिव्य संदेश को दूर-दूर तक पहुंचाने के लिए ताई मां ने अपने प्रबुद्ध साध्वी संघ के साथ नेपाल, इंग्लैंड, अमेरिका, कनाडा, सिंगापूर, कोलालाम्पुर, होंगकांग, शिकागो, लन्दन आदि 25 से अधिक देशों की यात्रा की है। लेस्टर में पूज्य ताई मां ने जैन धर्म के बोध-प्रद प्रसंगों का अंकन करता सुंदर म्युजियम भी बनाया है। जो राष्ट्रीय दर्शनीय स्थलों में मान्यता प्राप्त है।

कलकत्ता, यूके, केन्या, दुबई आदि अनेक देशों में स्थापित 'श्री चंदना विद्यापीठ' द्वारा भगवान महावीर के संदेशों को देश-विदेश में बसे भारतीय जनमानस विशेषकर युवा एवं बच्चों के जीवन में निष्पादित करने का कार्य पिछले कई वर्षों से निरंतर हो रहा है।



कला मर्मज्ज श्री ताई मां के हाथों में जातू है और उनके द्वारा निर्मित 'श्री ब्राह्मी कला मंदिरम्' अब तक 65 लाख से अधिक पर्यटकों द्वारा देखा जा चुका है।

ताई मां की हर दिन- नए सूर्योदय के साथ, एक नई कार्य योजना होती है! संकल्प लेते हैं और उसको मूर्त रूप देने के लिए दृढ़ता से अग्रसर हो जाते हैं। 87 वर्ष की आदरणीय वय में भी भविष्य की अनेक सुंदर योजनाओं के लिए कार्यरत हैं:

**डायग्नोस्टिक सेंटर- बिहार, राजगीर  
एजुकेशनल रिसर्च सेंटर- कांदिवली,  
मुंबई प्रज्ञालयम् -पालीताना, गुजरात  
ई टीचिंग एजुकेशनल सेंटर- बैंगलुरु, कर्नाटक  
समोसरण प्रोजेक्ट- कच्छ, गुजरात  
गौतम गुरुकुल- राजगीर  
और परमानेंट एजुकेशन सेंटर- नेपाल**

वीरायतन का यह अंतर्राष्ट्रीय स्तर का विशाल सेवा कार्य संभव हो सका है सक्षम, कर्मठ एवं तेजस्वी साध्वी संघ के अद्भुत समर्पण से! कार्यकारिणी

समिति के निष्ठावान एवं सम्माननीय कार्यकर्ता तथा समाज के भावनाशील एवं उदार सदस्यों के अत्यंत प्रेमपूर्ण सहयोग से। वीरायतन पिछले 50 वर्ष से निरंतर प्रगति कर रहा है। प्रबुद्ध विचारक डॉ. अभय फिरोदिया जी की अध्यक्षता में वीरायतन का कार्य सुचारू रूप से संचालित है तथा समाज में आदर भाव से प्रतिष्ठित है।

श्रद्धेय ताई माँ का यह विराट जीवन! इस एक जीवन ने अनगिनत जीवन को अपने मातृत्वपूर्ण हाथों के स्पर्श से अमृतबोध बांटा है। लाखों लोगों के लिए उत्साहवर्धक प्रेरणा प्रदान की है। शून्य में से सृजन करके पूर्णता प्रकट की हैं।

ऐसे अग्नि में कमल खिला देने वाले योगिराज!

**'मुस्कान से मोक्ष' के प्रस्तोता ।  
दिव्यातिदिव्य जीवन के साक्षात् स्वरूप!  
अभिनन्दन! अभिनन्दन!! अभिनन्दन!!!  
वन्दन! वन्दन! वन्दनानुवन्दन!**



श्री अमर भारती



-उपाध्याय साधीश्री यशा जी

चरित्र धर्म साधना से कठिनतम है श्रुतधर्म साधना और इन दोनों का समन्वय अर्थात् आर्हत्-धर्म। ऐसी आर्हती दीक्षा को जिन्होंने किशोरावस्था में ही अंगीकार किया। उनके मन में जिज्ञासाएँ थी, अनेक प्रश्न थे। दीक्षित होते ही जिन्होंने अध्ययन की गहराई में उतरना शुरू किया। प्रश्नों का अम्बार उनके मनोमस्तिष्क में वृद्धिंगत हो रहा था—

जीवन क्या है, धर्म का वास्तविक

स्वरूप क्या है? पदार्थ विज्ञान में चिकित्सा विज्ञान में जैसे नये-नये संशोधन होते हैं, औषधियों में परिवर्तन होते हैं, टेक्नोलॉजी में हरदिन परिवर्तन होते हैं। ऐसे धर्म में, धर्ममार्ग में क्यों नहीं होता?

इन प्रश्नों के अंधेरे को चिरती हुई-सी निर्धूम ज्योति शिखा आचार्य चन्दनाश्रीजी सुदीर्घ शोध में से बाहर आयी और उन्होंने अपनी साधना की, अपने कर्मभूमि की प्रयोग

एवं अनुसंधानशाला बनायी।

**प्रश्न जनमानस के—**

उन्होंने वर्षानुवर्ष श्रुतसाधना व मौन साधना के साथ भारत भर में विहार यात्रा की। चाहे रेंगिस्तान की तपती बालु हो या कश्मीर की सुन्दर वादियाँ हो, नदी तट हो, समुद्र तट हो चाहे हिमालय की चढ़ाई हो या चम्बल की भयावह घाटी हो सर्वत्र जिनकी ध्यानसाधना की तल्लीनता अखण्डित रही। और साधु जीवन की कठिन चर्या के साथ ज्ञानालोक में सम्पन्न हुई।

अपनी तपोमय बिहार यात्रा के साथ जिन्होंने जनमानस को भी पढ़ा। उनकी अपेक्षाओं-आकांक्षाओं को जाना, उनके दुःख-दर्द का अनुभव किया। विविध विषमताओं से ग्रस्त समाज की दुन्द्रात्मक परिस्थितियों और परेशानियों को झेलते लोगों की व्यथा महसूस की। एक तरफ वे लोग जो न अपनी साधारण-सी आवश्यकता की भी पूर्ति कर पाते हैं और न अपने बच्चों को ही उच्चशिक्षा दे पाते हैं। दूसरी तरफ वे लोग जो आवश्यकता से कई गुणा अधिक और सर्वश्रेष्ठ पा लेते हैं। इन दोनों के बीच की खाई पाटनेवाला सेतु निर्मित हो तो कैसे हो? मन्थन चलता रहा। स्वयं ही मथानी बनकर, स्वयं की ही रस्सी बनाकर, स्वयं ही मन्थन करते रहे। वे कौन?

वह नाम है— आचार्य श्री चन्दनाश्रीजी पूज्य

ताई माँ।

कच्छ की धरती पर 26 जनवरी 2001

में जब भूकम्प आया तब मकानों के मलबों में दबी कराहती मानव अस्मिता को किसने सुना? किसने भगवान महावीर की धीरता तथा वीरता का संदेश दिया?

मलबे के ढेर पर उदास बैठे लोगों की सूनी आंखों में स्वप्न किसने संजोए? बेसहारा हजारों युवकों को वोकेनल ट्रेनिंग देकर आत्मनिर्भर किसने किया? प्राकृतिक आपदाओं के कहर में [भूकम्प, बाढ़, सुनामी आदि] आपदाओं में जीवन रक्षक के रूप में महावीर का संदेश लेकर कौन आया?

वीरायतन की शुरुआत में अभाव और असुरक्षा के सघन कुहासे में हजारों नेत्ररोगियों की सार-संभाल लेनेवाला कौन खड़ा था? सौ दिनों की हड्डताल, बाहर की आवाजाही बंद, सामग्री का अभाव ऐसे कठिनतम समय में हिम्मत बंधानेवाला कौन था?

असामाजिक तत्वों के उपद्रव में, स्थानीय असुरक्षा में, सहयोग तथा सुविधाओं के अभाव में श्रद्धाशील सज्जनों, आत्मीय जनों एवं संघ समाज की चारों ओर से इन्कार की ध्वनियाँ गूंज रही थी कि ऐसे उपद्रवियों के बीच कार्य नहीं करना है।

तब भी न रुके, न पीछे हटे, न हारे, न निराश हुए। न शंकित हुए कि कौन आयेगा? कैसे होगा? बल्कि प्रसन्न मन, प्रसन्नवाणी और

प्रसन्न-प्रेमपूर्ण व्यवहार के साथ उत्साह से बढ़ते रहे, बढ़ते ही चले वे कौन?

इन सारे प्रश्नों के उत्तर में एक ही नाम है और वह है— आचार्य चन्दनाश्रीजी पूज्य ताई माँ। इन्होंने 2550 वर्ष के जैन इतिहास में प्रथम बार आचार्य पद प्राप्त किया है। अर्थात् ‘आचार्य’ पद से अलंकृत प्रथम साध्वी है आचार्य चन्दनाश्रीजी। जिनके श्रुतधर्म और चारित्रधर्म की समाराधना के गहनतम आत्मभावों में से उद्भूत कलामर्ज्जता से निर्मित है “श्री ब्राह्मी कला मंदिरम्” जिसे आज तक 65 लाख लोग देखकर अभिभूत हुए हैं। और उन्हों की अन्तर्जगत की अहिंसा के सक्रिय विधेयात्मक स्वरूप की प्रस्तुति का सर्वमंगल रूप है— ‘वीरायतन’

उनकी प्रज्ञामूलक दृष्टि, श्रद्धानिष्ठ पुरुषार्थ, अदम्य साहस एवं सुदीर्घ तपश्चर्या से जनजीवन में सकारात्मक बदलाव आया है, जीवन को नये रूप में देखना जाना है और वे आत्मनिर्भर हुए हैं। जीवन में मानवीय मूल्यों को प्रधानता देने लगे हैं। पशुसंरक्षण, पर्यावरण, सुरक्षा, जीवनशुद्धि, धर्म सहिष्णुता जैसे उच्च जीवन मूल्यों को उन्होंने अपनाया है। वीरायतन में लाखों-लाख लोगों की नेत्र चिकित्सा, दन्त चिकित्सा एवं आई ऑपरेशन सम्पन्न हुए हैं।

वीरायतन में 10 हजार विद्यार्थी शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। हरिकेशीय विद्यालय पावापुरी, नालन्दा बिहार और रुद्राणी स्कूल कच्छ,

गुजरात में (फ्री एज्युकेशन) 2000 बच्चों को निःशुल्क शिक्षा, सारी सुविधाओं के साथ दी जाती है। तीर्थकर महावीर विद्या मंदिर पावापुरी, तीर्थकर महावीर विद्या मंदिर लछुवाड, तीर्थकर महावीर विद्या मंदिर जखनिया, इसी प्रकार जयपुर, ओसिया, सांचोर आदि क्षेत्रों में एवं विदेशों में 10,000 के करीब विद्यार्थी वीरायतन द्वारा शिक्षा प्राप्त करते हैं। वीरायतन कच्छ में टेक्निकल इंस्टिच्यूट, फार्मसी इंजीनियरिंग आदि दस कॉलेज एवं पावापुरी में बी.एड. कॉलेज में सैकड़ों विद्यार्थी उच्च शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं। सेवा, शिक्षा और साधना के उनके बहुआयामी कार्यक्रमों की धारा कलकल करती निरन्तर प्रवहमान है। 50 वर्षों की यह यात्रा ‘पद्मश्री’ डॉ. आचार्य चन्दनाश्रीजी की गौरव गाथा है। मानव जाति के प्रश्नों के समाधान की दिशा में उठाया कदम है।



28 जनवरी की सुबह, लाखों, करोड़ों लोगों के लिए यह एक साधारण सुबह होगी लेकिन मेरे लिए आज की प्रातः: आज की सुबह एक दिव्य, रमणीय, अनूठी प्रभात है। आज मेरी प्रव्रज्या है, दीक्षा के स्वर्णिम पथ को मैं अंगीकार करने जा रही हूँ। ढाई हजार वर्ष पूर्व जिस दिव्य पथ पर चले थे, हम सबके पूज्य तीर्थकर महावीर, गुरु गौतम, सुधर्मा स्वामी, जम्बु स्वामी, धना, शालीभद्र और ऐसे हजारों-हजार साधक। और 62 वर्ष पूर्व चले थे इस दिव्य मार्ग पर हम सबके आराध्य प्रिय प्रियातिप्रिय श्री ताई माँ श्रद्धेय पूज्य आचार्य श्री चन्दना जी, जिन्होंने इस स्वर्णिम पथ पर चलकर इस पथ को गौरवान्वित किया नए कीर्तिमान स्थापित किये, महावीर के जीवन दर्शन को समयानुरूप नयी परिभाषाएँ दी और साधना का एक नवीन रचनात्मक स्वरूप दुनिया के समक्ष प्रस्तुत किया। आसान नहीं था यह— बने बनाए रास्तों पर तो सभी चलते हैं और चलना आसान भी होता है। लेकिन अपनी सूझ अपनी मेघा, अपने साहस से नये रास्तों का निर्माण किसी युग-द्रष्टा से ही संभव हो

सकता है। ताई माँ आपने समाज को एक नयी दृष्टि दी है, एक नयी प्रेरणा दी है, नया मार्ग दिया है। Visionary है आप ताई माँ। Legendary है आप ताई माँ। जैन समाज में दीक्षित वर्ग द्वारा सेवा कार्य के Pioneer हैं आप ताई माँ। अभिनंदन है आपका ताई माँ।

मैं चेन्नई से आई थी। वीरायतन कच्छ को देखने के लिए। बहुत नाम सुना था कि यहाँ का संस्कार युक्त शिक्षण बहुत सुंदर है। बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिए यहाँ अनुठा कार्य हो रहा है। पर्यावरण सुरक्षा का विशेष ध्यान यहाँ रखा जाता है। कच्छ के सुखे रेण में खिले गुलाब जैसा है वीरायतन। और जब मैं यहाँ आई मेरी कल्पना से परे था सब कुछ तो मैं देखती रह गयी कैसा निःस्वार्थ कार्य, धर्म, पंथ, वर्ण सब भेदों से परे बस एक कल्याण भाव, सबके विकास का अनूठा मंगल भाव। मैं सोचती ही रह गयी ऐसा कही होता है— यह दुनिया तो स्वार्थ से चलती है, हर रिश्ता, हर संबंध स्वार्थ का होता है। लेकिन वीरायतन में पूज्य ताई माँ की प्रेरणा से यहाँ सम्पूर्ण साध्वी संघ बिना किसी अपेक्षा के निरंतर कार्य कर रहा है। जैसे

कर्म ही उनकी साधना है, कर्म ही उनकी पूजा है। आप सब जानते ही हैं कि कोरोना महामारी में कितना नुकसान हुआ। कितने ही बच्चों ने अपने माँ-बाप को खो दिया। उन सैकड़ों, हजारों बच्चों के शिक्षण और भविष्य का प्रश्न था। अंधकार जैसे लगता था- लेकिन श्री ताई माँ फिर एक बार मसीहा बन कर आए और कहा कि वे बच्चे जिन्हें मदद की जरूरत है, वीरायतन थामेगा उनका हाथ। और मैंने देखा कि ताई माँ के आशीर्वाद से अत्यंत प्रेम और सांत्वना से यहाँ साध्वी जी बच्चों से मिल रहे थे। और उनके परिवारों को आश्वाशीत कर रहे थे कि आप बिल्कुल चिंता न करे इस मुश्किल समय में हमसब आपके साथ हैं, वीरायतन आपके साथ है। ताई माँ के आशीर्वाद आपके साथ है। मैं देखती रह गयी, सोचती रह गयी, दूसरों के कल्याण के लिए समर्पित यह श्रेष्ठ जीवन, मैं सो न सकी उस रात, ताई माँ की प्रेरणा से साध्वियों का यह अद्भुत जीवन सुबह प्रार्थना, सांझ प्रार्थना, तप, स्वाध्याय और इन सबके साथ सत्कार्य की सुगंध, सत्कर्म की प्रेरणा, सत्कर्म का सार्थक्य। ऐसा सुंदर जीवन और मुझे लगा कि मैं क्यूँ नहीं चल सकती इस मार्ग पर। अपने लिए तो सभी जीते हैं, मेरा परिवार, मेरे बच्चे मेरा comfort, मेरी सुविधा इस लक्ष्य के साथ तो पूरी दुनिया जीती है- लेकिन दूसरों के लिए जो जीते हैं, वे जीवन अमर हो जाते हैं।

**खुद को जला कर देना है, सूरज सबको रोशनी, अंधेरी रात में चांद भी, फैलाता है चांदनी। धूप में तपने वाले दृश्यों, की भी अजब है माया॥**

चूपचाप रह कर देते हैं सबको फल और छाया और मैंने तय किया कि मैं दीक्षा लुंगी क्योंकि ताई माँ की दीक्षा सिर्फ आत्म कल्याण के लिए नहीं मात्र अपने कल्याण के लिए नहीं अपने साथ-साथ दूसरों की मदद के लिए भी है— स्वपर कल्याण का मार्ग है और इसी श्रेष्ठ मार्ग पर जीवन समर्पित करने का मुझे सौभाग्य प्राप्त हो रहा है।

**किसी के मुस्कुराते पे हो मिशाल, किसी का दर्द मिल सके तो ले उद्धार, किसी की वासते हो तेरे दिल में प्यार, जीना इसी का नाम है, दीक्षा इसी का नाम।**

दुनिया में हजारों ऐसे बच्चे होंगे जिन्हें मदद की जरूरत होगी, जिन्हें सहायता की आवश्यकता होगी और मेरा जीवन इन्हों के कल्याण के लिए समर्पित हो, ऐसा मेरा भाव, ऐसी मेरी प्रार्थना, ऐसी मेरी अभ्यर्थना। फिर ताई माँ कच्छ आए और इस संकल्प को मेरी इस प्रार्थना को ताई माँ ने सुना। कुछ प्रश्न उन्होंने मुझसे पूछे, प्रतिदिन पढ़ाते थे, और उनके दिव्य सानिध्य का सौभाग्य मुझे मिला। फिर वह स्वर्णिम क्षण आया। पूज्य ताई माँ ने मुझे दीक्षा की अनुमति दी। वे खुशी के क्षण, वह प्रसन्नता। शब्दों में बया नहीं की जा सकती। दीक्षा की अनुमति देकर अनुगृहित

किया आपने ताई माँ। बिना मांगे झोली भर देते हैं आप ताई माँ। इसलिए ईश्वर की दिव्य प्रतिनिधि हैं आपकी उपस्थिति ताई माँ। इस स्वर्णिम मार्ग पर चलने की आप दिव्य प्रेरणा है, आदर्श है, संबल है। आपके चरणों में अनगिनत धन्यवाद। पूज्य गुरुदेव उपाध्याय श्रीअमर मुनिजी महाराज के आशीर्वाद से इस मंगल प्रसंग पर मैं धन्यवाद समर्पित करना चाहूंगी। पूज्य उपाध्याय श्री यशा जी महाराज, पूज्य साधना जी महाराज, पूज्य चेतना जी महाराज, पूज्य विभा जी महाराज, पूज्य श्रुतिजी महाराज, पूज्य सम्प्रज्ञा जी महाराज, पूज्य संघमित्रा जी महाराज, पूज्य विभाजी महाराज, पूज्य रोहिणी जी महाराज, पूज्य दिव्या जी महाराज और पूज्य शाश्वता जी महाराज को धन्यवाद कि उन्होंने मुझे वीरायतन का परिचय कराया। और मेरा विशेष धन्यवाद पूज्य शिलापी जी महाराज को जिनका जीवन मेरे लिए विशेष प्रेरणा रहा, हर कदम पर उन्होंने मुझे संभाला, अदिखम संबल है वे मेरे लिए और क्या कहूँ पूज्य सुमेधा जी महाराज और पूज्य मनस्वी जी महाराज के लिए माँ से भी अधिक विशेष प्रेम दिया है मुझे हमेशा-हमेशा जब भी वे यहाँ आते हैं उनकी मिठास मेरे दिल को छू जाती है। अनुगृहीत रहूँगी। इस मंगलमय प्रसंग पर मैं अपने पिता, माँ, दादीसा, बूआ भुवासा और पूरे परिवार के प्रत्येक सदस्य को प्रणाम करती हूँ। धन्यवाद ज्ञापित करती हूँ कि बचपन से ऐसे धार्मिक

संस्कार दिए की यह सुंदर जीवन अंगीकार करने के लिए मुझे अंतर प्रेरणा हुई। प्रभु के इस दिव्य मार्ग पर समर्पित होने के लिए मेरे परिवार ने मुझे सहर्ष आज्ञा प्रदान की इस के लिए मैं अंतःकरण से अनुगृहीत हूँ और मैं आप सबको आश्वाशीत करती हूँ जिस दिव्य मार्ग पर संकल्पपूर्वक प्रयाण कर रही हूँ— सम्पूर्णतः समर्पित होकर, इसी दृढ़ता से इस मार्ग पर मैं आगे बढ़ती रहूँगी। जाए सद्गुरु निवारणं तमेव अणुपालेज्जा।

आप सबके आशीर्वाद, शुभकामनाएँ मेरे साथ हैं। जिससे मुझे पूरा विश्वास है कि इस मार्ग पर मेरी श्रद्धा उत्तरोत्तर अभिवृद्ध होगी। आज मेरे नए जीवन का प्रारंभ है, नया जन्म है, इसलिए पीछे मुझसे कुछ भी भूल हुई हो, किसी को मेरे द्वारा ठेस पहुँची हो मैं अंतःकरण पूर्वक क्षमाप्रार्थी हूँ। देव गुरु धर्म की साक्षी के साथ सबको मिक्छामी दुक्कड़म।

क्या है दीक्षा? असक्य से सत्य की ओर, तमस से आलोक की ओर, मृत्यु से अमरत्व की ओर। अग्रसर होनेवाली एक अखण्ड ज्योतिर्मय जीवन यात्रा।

गुरु कृपा से भाग्यशालियों को यह अवसर मिलता है।

**दीक्षा का पथ असिधारा है, विरले ही चल पाते हैं। जो चलते हैं आत्मदेव के दर्शन वे कर पाते हैं।**



## क्षणे-क्षणे यन्नवतामुपैति

- आचार्यश्री चन्दनाश्रीजी

आज के इस प्रसंग पर बोलने की अपेक्षा यही चाहुंगी कि मेरे सम्माननीय पूर्व प्रवक्ताओं ने जो मेरे लिए भावनाएँ व्यक्त की है, जो उन्होंने मुझे में देखा है उसके अनुरूप मैं कार्य कर सकूं, अपने जीवन का प्रत्येक क्षण समाज हित में समर्पित कर सकूं।

मुझे यह कहने में बिल्कुल संकोच नहीं है कि छह दशक पूर्व जिस समय मैं रूढ़ीवादी विचारों से अलग हटकर खड़ी थी, तब मैं निपट अकेली थी। परिवार, रिश्तेदार, बन्धु-बान्धव, समाज कोई भी साथ नहीं था। लेकिन मेरे कदम नहीं रुके। धीरे-धीरे समाज जुड़ता गया काफला बनता गया। और वीरायतन के माध्यम से प्रभु महावीर की अहिंसा का, करुणा का जो विस्तार हो सका है, मैं उसके लिए समाज के प्रति ऋणी हूँ, कृतज्ञ हूँ, और आज के इस प्रसंग पर उनका अन्तःकरण पूर्वक अभिवादन करती हूँ।

50 वर्ष का यह समय छोटा नहीं है। पचास वर्ष में कपड़े, गहने, मकान सब पुराने हो जाते हैं व्यक्ति बूढ़ा हो जाता है, संस्था बूढ़ी

हो जाती है। लेकिन आप वीरायतन को देखते हैं, वह नया से नया होता जाता है। आप इस वर्ष जैसा देखते हैं अगले वर्ष देखेंगे तो नया देखेंगे। हर वर्ष नया होता है वीरायतन, हर दिन नया से नया होता है। **क्षणे-क्षणे यन्नवतामुपैति तदेव रूपं रमणीयतायाः।**

**वस्तुतः** जिसका बचपन जिसका उत्साह बरकरार रहता है वही अपनी लम्बी यात्रा पर आगे से आगे बढ़ता जाता है। इसीलिए वीरायतन आनेवाले सौ वर्ष का स्वप्न देखता है। और मुझे विश्वास है समाज के प्रबुद्ध लोगों पर।

मैं अभ्यभाई को आत्मीयता के साथ संबोधित करते हुए स्मरण करती हूँ उनके पिता के ही नहीं उनके दादा को भी जो समाजोत्थान के कार्यों से जुड़े रहे हैं। मैं बचपन से ही उनके प्रेम, प्यार और आशीर्वाद पाती रही हूँ। इनके दादा जो पार्लीयामेन्ट के स्पीकर रहे, बारह साल की मैं जब उनसे दीक्षा की बात करती तो वे कहते “तुम चाहती हो ‘बेबी’ दीक्षा लेना तो जरुर लोगी।” और जब 1952 में सादड़ी

[मारवाड़] के साधु सम्मेलन में उन्होंने मुझे दीक्षित देखा तो, वे चकित हुए और प्रसन्न भी। उन्होंने कहा, ‘जब दीक्षित हो गई हो तो पूरे मन से पढ़ाई करना।’ और उन्होंने गुरुमां श्री सुमति कुंवरजी को भी कहा कि चन्दना की पढ़ाई का पूरा ध्यान रखना, वह प्रतिभा सम्पन्न है।

मैं स्तब्ध थी उनकी बात सुनकर कि एक ऐसे वरीष्ठ व्यक्ति जो सम्पूर्ण स्थानकवासी साधु सम्मेलन के संचालक हो, सर्वोच्च पदाधिकारी हो, और मेरे जैसी एक लघुतम साध्वी के लिए कुछ सोचे, कहे और उसके भविष्य की चिन्ता दर्शाएँ। बड़ी बात थी।

तदनन्तर उनके पुत्र श्री नवलमल जी फिरोदिया जिन्हें वीरायतन का हर व्यक्ति ‘बाबा’ के संबोधन से संबोधित करता है। उन्होंने वीरायतन के हर कार्य को अपना समझकर किया। उन्होंने इतनी बड़ी इण्डस्ट्री बनाई उसमें शायद ही उन्होंने खुद खड़े होकर कोई काम किया होगा। लेकिन जब वीरायतन

में हॉस्पिटल का निर्माण हो रहा था तो आठ दिनों तक स्वयं सुबह से शाम तक खड़े रहकर रोड का निर्माण कराया था। इसी प्रकार हर वीरायतन के छोटे से छोटे कार्य को भी उन्होंने बड़ी लगन से सम्पन्न किया।

आज उनके सुपुत्र श्री अभ्य भाई इतने विस्तार पाये हुए वीरायतन के हर कार्य पर निगरानी रख रहे हैं। एक-एक साध्वी के स्वास्थ्य, एज्युकेशन तथा उनकी हर आवश्यकता का ख्याल है उन्हें। वीरायतन की प्रगति की हर दिशा में सशक्त कदम उठाने का कार्य वे कर रहे हैं। मुझे समाधान है, पूरा विश्वास है कि आगे आनेवाला समय आप जैसे प्रबुद्ध व्यक्तियों के स्वस्थ सान्निध्य में, योग्य साध्वियों की क्षमता के साथ होगा। अतीत की गौरव-गरिमा और प्रभास्मान यशोकीर्ति को नयी दिशा में बढ़ाने की यात्रा होगी। सुयोग्य लोगों का सहयोग प्राप्त होता रहेगा। श्री सुन्दरजी भाई की पुत्रवधू शैली जैसे, श्री नवीनजी जैसे अनेक नये-नये सक्षम, प्रबुद्ध और निष्ठावान लोग वीरायतन से जुड़ रहे हैं। निश्चित ही वीरायतन का भविष्य उज्ज्वल है, प्रकाशमान है। मुझे आप लोगों की क्षमता पर, भावना पर एवं विचारों पर भरोसा है। परमात्मा से प्रार्थना करती हूँ कि प्रभु आपको खूब-खूब शक्ति प्रदान करे और आप जिन शासन के गौरव को निरन्तर आगे बढ़ाते रहे।



श्री अमर भारती

25

फरवरी-मार्च- 2023



पूज्य ताई माँ का आज 87वां जन्मदिन है। लम्बी जर्नी है। मैंने जो समझा है, लगभग 35 वर्षों से जाना है, वे साधारण व्यक्ति नहीं है। वे रिबेल हैं, बागी हैं। रिबेल वह होता है जो प्रचलित चीजों के खिलाफ खड़ा होता है। रिबेल अच्छा भी होता है और बुरा भी होता है। जो अच्छा होता है वह मानवता के लिए पूरक रास्ता ढूँढ़ने की क्षमता रखता है।

जहां तक मुझे पता है, मेरे दादा भी ताई माँ को जानते थे जब वे बालिका थी। मेरे पिता ने तो बहुत वर्षों तक उनके साथ वीरायतन में अपना योगदान दिया है। मैंने गुरुदेव श्री अमरमुनिजी महाराज के दर्शन किये हैं। पर मेरे जीवन की यह दुःखद बात है कि मैं उनके साथ समय नहीं बिता पाया। परन्तु पूज्य ताई महाराज को मैंने बहुत करीब से और बहुत

वर्षों से देखा है। और मैंने पाया कि इस व्यक्ति का जन्म अनुकरण के लिए नहीं किन्तु नयी राह खोजने के लिए हुआ है। उन्होंने बचपन से ही नया रास्ता खोजने की शुरुआत की। इस कार्य में उन्होंने न अपने आराम की, चिन्ता की न कुटुम्ब, परिवार की परवाह की।

अनुकरण बहुत आसान है। जैन परम्परा में हजारों वर्षों से साध्वियाँ हैं। हर तीर्थकर के समोशरण में साध्वियों का स्पष्ट वर्णन है। उन साध्वियों की आचार, व्यवहार के नियमोपनियम तीर्थकरों ने, भगवान महावीर ने विस्तार से बताये हैं। उन नियमोंपनियमों का महत्व उस समय था, निश्चित रूप से बड़ा महत्व था। परन्तु आज देश, काल परिस्थिति के अनुसार उसके आगे विचार करने की जरूरत है। यह स्वयं महावीर

भगवान ने कहा है।

इस बात को ताई माँ ने बहुत पहले ही समझ लिया था। उनकी दीक्षा के बाद जब वे महाराष्ट्र के आचार्य आनन्द ऋषिजी महाराज के संघ में थीं।

उन्हें अपनी खोज को दिशा नहीं मिली। वे गुरुदेव उपाध्याय श्री अमर मुनिजी महाराज के पास आयी। उन्होंने आचार्य रजनीश (ओशो) को भी जाना, पहचाना, टटोला। सब देखकर उन्होंने निश्चय किया कि वे अपना मार्ग स्वयं तय करेंगी।

सच्चा मार्गदर्शक वही होता है जिसने मार्ग को जाना हो, समझा हो। एक साधारण जैन साध्वी क्रान्तिकारी नहीं होती। वह कल्याणकारी होती है। ताई माँ कल्याणकारी भी है और क्रान्तिकारी भी है। प्रश्न है कि वे क्यों क्रान्तिकारी हैं? क्या जैन मूल्य सिर्फ तप है? और वे इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि नहीं, इतना ही नहीं, इससे भी आगे है जैन मूल्य। इससे ज्यादा जरूरी चीजें हैं जो आज के समय में विचारणीय हैं। ढाई हजार वर्षों पुराने बंधनों में बंधे रहकर उन मूल्यों की परिधि छोटी और सीमित रह जायेगी। अगर हमें जैन मूल्यों का प्रचार करना है, उसे विस्तार देना है तो उन बंधनों में परिवर्तन लाना होगा। विलक्षण व्यक्ति वह होता है जो बगीचे में उग आयी कंटिली झाड़ियों को हटाकर फूलों के वृक्षों को संचिता है।

ताई माँ ने निश्चय किया कि उन्हें सक्रिय होना जरूरी है। सक्रिय होकर ही समाज को, जैन मूल्यों का महत्व बताया जा सकता है। अतः ताई माँ बिहार पधारी और उस भूमि पर वीरायतन संस्थान को संस्थापित किया। जहाँ अनेकों कठिनाईयों का उन्होंने सामना किया। उन्होंने लोग संपर्क किया। और उन्होंने महसूस किया कि लोगों के मन में जैन मूल्यों के प्रति आदर निर्माण करने के लिए उनकी सेवा करनी होगी। इसलिए उन्होंने आय कैम्प किया, आई हॉस्पिटल बनाया। जैसे-जैसे संस्था का विस्तार होता गया। और वे अनावश्यक बन्धनों से ऊपर उठकर मूल्यों को बढ़ाते गये। इस प्रकार वीरायतन का परिचय तथा वीरायतन की रुद्धिता बढ़ती गयी।

मेरा स्वयं का अनुभव है कि जब कच्छ में धरती कंप हुआ था तो उन्होंने निश्चय किया कि वे कच्छ जायेंगे। मुझे पता लगा तो मैंने विरोध करने की कोशिश की। मैंने उन्हें कहा कि ताई माँ! आप क्या करेंगी वहां जाकर, न वहाँ रहने की जगह है, न खाने-पीने को कुछ है। सब अपाहिज लोग पड़े हैं। क्या कर लोगे आप वहां जाकर? लेकिन वे अपने निश्यय पर अडिग रही।

तब मुझे मेरे पिता के शब्द याद आये। उन्होंने मुझे कहा था कि बन सके तो तुम वीरायतन से जुड़ना, वीरायतन के लिये जो कर सको वह करना लेकिन एक बात याद रखना

कि तुम चन्दनाश्रीजी को बदलने की कोशिश मत करना। वे किसी की नहीं सुनते। तुम अपेक्षा करोगे कि वे तुम्हारी बात सुनेंगी, ऐसा संभव नहीं होगा। अगर तुम्हें लगे कि उचित कार्य हो रहा है तो तुम सपोर्ट करना यही श्रावकवर्ग का कर्तव्य है।

वीरायतन ने जैन मूल्यों को बढ़ाने का नया रास्ता दुनिया को दिखाया है। एक बात मैं संक्षेप में फिलोसोफिकल कहुंगा कि हर धर्म के तीन आयाम होते हैं— रीच्युअल्स, (क्रियाकाण्ड), पुराणकथा, कहानियाँ और मूल्य। रीच्युल्स याने पूजा पाठ, जप-तप आदि। कुछ कहानियाँ होती हैं— महापुरुषों की, उपदेशकों की कहानियाँ होती है। स्टोरीज ऑफ गोड्स। और तीसरा आयाम है— मूल्य। हर धर्म में मूल्य होते हैं। जैसे जैन धर्म के मूल्य हैं— अहिंसा, अनेकान्त, अपरिग्रह आदि। प्रश्न है— धर्म क्या है रिच्युअल्स धर्म है या स्टोरीज धर्म है या मूल्य धर्म है?

कुछ वर्ष पूर्व मुझे दलाइलामा से मिलने का मौका मिला। कुछ लोगों के साथ मैं भी उनसे बात कर रहा था। एक बहन ने उन्हें पूछा— “व्हाट इज रीलिजन?” उनका उत्तर सुनकर मैं धन्य हो गया। उन्होंने कहा, ‘रीलिजन इज द प्रोसेस ऑफ इन्हाँसिंग विदइन वेल्यु।’ धर्म वह प्रयास है जिसकी वजह से मूल्यों में आस्था बढ़े। आपको धर्म का पालन करना है तो आप मूल्यों में आस्था बढ़ाइये।

ताई माँ ने बाकी आवरण हटा दिये और वे जो मूल्य हैं “मानवता की सेवा, स्व पर कल्याण के लिए साधना तथा स्वयं को सक्षम करने के लिए शिक्षा। ये तीन चीजें बहुत सुन्दरता से उन्होंने परखी। उन्होंने कहा, “हम जैन इसलिए नहीं है कि हम स्थानकवासी या मंदिरमार्गी अथवा दिगम्बर तेरापंथी आदि हैं। हम जैन इसलिए हैं कि हम जैन मूल्यों को मानते हैं। ताई माँ ने जैन मूल्यों पर ज्यादा से ज्यादा जोर दिया। आपको आश्चर्य होगा सुनकर कि भगवान महावीर जैन नहीं थे, श्रमण थे। जैन शब्द भगवान महावीर के निर्वाण के पश्चात् एक हजार वर्ष के बाद प्रचलित हुआ। सभी तीर्थकर आदिनाथ से महावीर तक जैन नहीं थे श्रमण थे।

भगवान महावीर दस वर्ष तक चार्वाक के साथ रहे। चार्वाक कहता था आत्मा नहीं है, पुण्य-पाप कुछ नहीं ‘खाओ-पीओ, मौज करो।’ उन्होंने देखा जगह-जगह पर हर व्यक्ति के विचार अलग-अलग है। तब उन्होंने अनेकान्तवाद का आविष्कार किया। हरेक व्यक्ति अपने-अपने तरीके से ठीक है। हमें निर्णय करना होगा कि हमें क्या करना है। एक साधक ने भगवान से पूछा, “धर्म क्या है?” तो भगवान ने कहा, “सच्चं खु भगवं।” सत्य ही धर्म है। पूछा कि सत्य क्या है? तो कहा, “पणा समिक्खए धम्मं” अपनी प्रज्ञा से, अपनी सत् असत् विवेक की बुद्धि से जानो

कि अच्छा करने के लिए मैं क्या कर सकता हूँ। वही धर्म है। इसके लिए किसी धर्म में कोई फर्क नहीं है।

ताई माँ ने इस मूल विचार की ओर जाने की कोशिश की। जैन परम्परा में और किसी ने यह कोशिश नहीं की। हर जैन परम्परा वंदनीय है। दिगम्बर परंपरा वंदनीय है, श्वेताम्बर परंपरा वंदनीय है, बौद्ध परंपरा वंदनीय है। भगवान बुद्ध का महान व्यक्तित्व था। दुनिया को बदल दिया उन्होंने। भगवान महावीर और भगवान बुद्ध में अन्तर नहीं है। मात्र कहने का तरीका अलग-अलग है दोनों का।

ताई माँ ने जो रास्ता आज की दुनिया के लिए हमें बताया है, वह महावीर से अलग नहीं है। उन्होंने कहा, “मानव कल्याण के लिए ऐसा होना चाहिए और ऐसा मैं करती हूँ। आप से अगर बन सके तो आप भी करो। आपके जो व्रत है वे तो ही जितना पालन कर सकते हो करो। तथा समाज के लिए हमें सेवा, शिक्षा और साधना के मार्ग पर चलना होगा।” अनेक श्रावक उनसे जुड़े। वे इसलिए जुड़े कि उन्होंने समझा कि इस मार्ग की समाज को जरूरत है। इससे समाज को निकट का सम्बन्ध है। ताई माँ केवल फिलोसोफी नहीं बताती, वे केवल मूल्यों तक सीमित नहीं रहती लेकिन उसे कैसे कार्यान्वित करना है यह भी वे बताती है। वीरायतन की यह विशेषता है कि

सेवा, शिक्षा और साधना के द्वारा हम जैन मूल्यों की रक्षा करते हुए समाज के उत्थान के कार्य कर सकते हैं। उन्होंने अपनी साध्वियों को भी तैयार किया है। यद्यपि वे संख्या में कम हैं लेकिन सुयोग्य साध्वियाँ हैं। लोग ताई माँ को कहते हैं कि शिष्य संघ को बड़ा करो। मुझे भी लगता है कि संख्या बढ़नी चाहिए। लेकिन यह महत्वपूर्ण है कि वे किस प्रकार से जैन मूल्यों को समाज तक पहुँचाने का कार्य करती हैं।

ताई महाराज! आपने जो रास्ता बताया है, साध्वियों के लिए, श्रावकों के लिए यह जैन समाज की प्रगति में बहुत बड़ा और बहुत महत्वपूर्ण कदम है।

हम जानते हैं कि जैन धर्म महावीर से नहीं शुरू हुआ, आदिनाथ से शुरू हुआ है। हजारों वर्ष पहले उन्होंने आदि युग में असि, मसि और कृषि की शिक्षा समाज को दी थी कि कैसे मानव सक्षम बने, कैसे शिक्षित हो, कैसे सुरक्षित रहे, कैसे समाज सुधरे इसका मार्ग दर्शन दिया। भगवान महावीर के काल तक आते-आते समाज- व्यवस्था स्थायी हो गयी थी। महावीर के समय में जो सांस्कृतिक प्रदेश है अफगानिस्तान से वर्मा तक इसमें कहीं पर भी धर्म को लेकर युद्ध नहीं होते थे। युद्ध जो होते थे वे धन के लिए, भूमि के लिए होते थे। तब महावीर ने युद्ध रोकने के लिए कहा था— उन्होंने कहा, ‘बाहर कोई शत्रु नहीं है, अपने भीतर की शत्रुता को मिटाओ।’ हमें सिर्फ

महावीर के धर्म की बात नहीं करनी है, हमें भगवान् ऋषभदेव के धर्म की भी बात करनी है। वीरायतन में आदि तीर्थकर और आखरी तीर्थकर दोनों के धर्म की व्याख्याएँ समाविष्ट है। आप सक्षम बनो, आप कर्तृत्ववान बनो, आप समाज के लिए उपयोगी बनो फिर भी अपने आपको अलिप्त रखो। ये दोनों बातें वीरायतन की भावना में निहित हैं।

ताई महाराज! आपके इस जन्मदिन पर मैं प्रार्थना करता हूँ कि आप खूब स्वस्थ रहे, प्रसन्न रहे और आगे का विचार करने की ऊर्जा सदैव आप में बनी रहे। आप समाज का, वीरायतन का मार्गदर्शन करती रहे और हमें प्रोत्साहित करती रहे।

हमें त्याग भी करना है और हमें समाज को भी ऊपर उठाना है। आपने हमें दुःख के निवारण की बात के साथ अलिप्तता की भी बात सिखाई है। आपकी यह सीख हमें वीरायतन की साध्याओं द्वारा प्राप्त होती रहे,



आगे से आगे चलती रहे।

आज अमेरिका में “जैना” संस्था जैन मूल्यों को विस्तार देने की दिशा में जो काम कर रही है, अमेरिका की अलग-अलग युनिवर्सिटीज से बात कर रही है, निश्चित रूप से यह कार्य उनका दुनियाभर में जैन मूल्यों को विस्तार देनेवाला होगा। वीरायतन का प्रभाव अमेरिका के जैना के फोलोवर्स पर भी हो रहा है मुझे यह कहना है कि वीरायतन का मार्ग जो ताई मां ने बताया है, वह सबको चाहे किसी भी प्रदेश में हो, किसी भी समाज में हो, उन्हें गाहू है, उन्हें भाता है।

अतः कहता हूँ कि ताई माँ! आपने एक हिस्टोरिक स्टेप लिया है। इतिहास याद रखेगा कि आपने एक बड़ा कदम उठाया है। जिससे सब लोग प्रोत्साहित हो सकते हैं। उन्हें निरन्तर प्रोत्साहित करते रहना यह संस्था का काम है। साध्याओं को उन्हें मार्गदर्शन करना है। संस्था के जो श्रावक हैं उनकी जिम्मेदारी है कि संस्था के जो विचार हैं, संस्था के जो कार्य हैं, उन्हें प्रचारित करें। ताई माँ! आपने जो कार्य किया है, प्रचण्ड कार्य है। हम सब अत्यन्त भाग्यशाली हैं कि हम आपके सान्निध्य में आये हैं। हमारा जीवन पवित्र हुआ है। प्रभु आपको उद्दण्ड आयु दे और हम सबको आपका आशीर्वाद हरदम प्राप्त होता रहे।

## श्री चन्दना विद्यापीठ केन्या- नैरोबी वीरायतन को "विभूषण" पुरस्कार

‘पद्मश्री’ डॉ. आचार्य चन्दना श्रीजी पूज्य ताई माँ की दीर्घदृष्टि और अमोघ आशीर्वाद तथा साध्वी श्री शिलापीजी के निरन्तर मार्गदर्शन से केन्या में श्री चन्दना विद्यापीठ विगत 25 वर्षों से कार्यरत है। जो बच्चों, युवाओं और वयस्कों को तीर्थकर महावीर की प्रकाशमान शिक्षाओं को अभिनव तरीके से शिक्षित करने का प्रयास कर रहा है। जो दस वर्षीय पाठ्यक्रम से नयी पीढ़ी में अध्यात्म की एक मजबूत नींब विकसित करता है। और उसे जीवन की चुनौतियों से निपटने का कौशल प्रदान करता है।

बड़ी प्रसन्नता है कि इस वर्ष श्री चन्दना विद्यापीठ केन्या में 10 विद्यार्थियों ने अत्यन्त उत्साहपूर्वक इस पाठ्यक्रम को पूर्ण किया है और अब वे अपनी जीवन यात्रा में आगे बढ़ रहे हैं।

इस प्रसंग पर 6 नवम्बर 2022 को एक स्नातक समारोह समायोजित किया गया। जो सामुहिक समाज सम्मेलन के रूप में था। अत्यन्त हर्ष का विषय है कि जैन सोशल ग्रुप इंटरनेशनल फेडरेशन ने इस विद्यापीठ के अनुकरणीय कार्य को मान्यता दी और इस मंगल प्रसंग पर श्री चन्दना विद्यापीठ केन्या को “विभूषण” पुरस्कार प्रदान किया।



## वीरायतन कच्छ में अविस्मरणीय त्रिवेणी महोत्सव

वीरायतन के राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय परिवार को 26 जनवरी- पूज्य ताई माँ के जन्मोत्सव की विशेष प्रतीक्षा होती है, लेकिन इस वर्ष 2023 की 26 जनवरी कुछ विशिष्ट थी। वीरायतन की स्वर्ण जयंति का आयोजन 26 जनवरी को ही मनाना तय हुआ और साथ में कुमारी झलक जैन का भव्य दीक्षा महोत्सव- इस त्रिवेणी महोत्सव के आयोजन के लिए पूज्य ताई माँ ने स्थान चयन किया, वीरायतन कच्छ, जहाँ की उल्लेखनीय उपलब्धियों ने पिछले 22 वर्षों में कच्छ में अपना एक विशिष्ट स्थान बनाया है। वर्ष 2001 के भयंकर भूकम्प के समय करुणामूर्ति पद्मश्री आचार्यश्री डॉ. चन्दना जी ने अपने समर्पित एवं तेजस्वी साध्वी संघ के साथ कच्छ की

धरती पर सेवा, शिक्षा और साधना के जो बीज बोए- आज वे बीज एक वटवृक्ष के रूप में एक अग्रिम, अद्वितीय शिक्षण एवं संस्कार धाम के रूप में कच्छ की शान बढ़ा रहे हैं। कच्छ में वीरायतन के अनेक संकुल हैं, और वीरायतन के हरिपर, कच्छ संकुल के विशाल प्रांगण में 26, 27, 28 जनवरी 2023 को

करुणामूर्ति पद्मश्री डॉ. आचार्य श्री चन्दना जी का 87वां जन्मोत्सव, वीरायतन की स्वर्ण जयंति और कुमारी झलक जैन की दीक्षा- इस त्रिवेणी महोत्सव का भव्यातिभव्य आयोजन हुआ।

महीनों पहले से ही संकुल में एक विशेष उत्साह और उमंग का वातावरण बन गया था। वीरायतन से जुड़ा प्रत्येक व्यक्ति इस महोत्सव को सफल बनाने के लिए हर संभव



खारी धरती पर जल और फूलों ने वीरायतन, कच्छ के प्रांगण को सुन्दर बना दिया है।

योगदान देने के लिए उत्सुक था; और विराजित थे स्वयं परम श्रद्धेय आचार्य श्री चन्दनाश्री जी, इस अनूठे महोत्सव को अपनी विलक्षण दृष्टि से एक नया आयाम देने के लिए। मंडप सज्जा, सांस्कृतिक कार्यक्रम, मेहमानों की व्यवस्था, एक अनूठी शैली से दीक्षा विधि- महोत्सव के प्रत्येक आयाम पर

उनकी दिव्य दृष्टि थी, जिससे संभव हो सका वीरायतन कच्छ का यह त्रिदिवसीय महोत्सव- शानदार, अविस्मरणीय, अद्भुत, अकल्पनीय! ये उद्गार थे, देश विदेश से आए उन हजारों प्रतिनिधियों के- जिनकी प्रेमपूर्ण उपस्थिति ने इस महोत्सव को यादगार बना दिया और महोत्सव के पश्चात कितने ही फोन, पत्रों और ईमेल द्वारा यह अभिव्यक्ति कि एक सामाजिक संस्थान द्वारा ऐसी व्यवस्था, ऐसा आयोजन, ऐसा Perfect Management हम सोच भी नहीं सकते।

त्रिवेणी महोत्सव की तैयारियाँ पूर्ण हो रही थीं, रंग-बिरंगी पताकाओं, मनमोहक प्रकाश व्यवस्था और सुंदर बेनर्स से सुसज्जित,



हरा-भरा वीरायतन, हरिपर का संकुल सबके स्वागत के लिए आतुरता से प्रतीक्षारत था। वीरायतन के प्रशंसकों, श्रद्धालुओं, सहयोगियों और सहभागियों का आगमन 18.01.2023 से ही प्रारंभ हो गया था। अहमदाबाद, राजकोट, गांधीधाम, भुज हवाई अड्डे, रेलवे स्टेशन आदि स्थानों पर वीरायतन परिवार के



Volunteers देश-विदेश से पधार रहे वीरायतन परिवार के सदस्यों के स्वागत के लिए पहुंचे और बड़े ही आत्मीय भाव से मेहमानों का स्वागत किया गया, जिसकी भूरी-भूरी प्रशंसा आगंतुकों द्वारा की गयी।

त्रिवेणी महोत्सव में सम्मिलित होने के लिए तथा आचार्य श्री जी के आशीर्वाद प्राप्त करने देश-विदेश से बड़ी संख्या में भक्तगण महोत्सव में आए। देश के विभिन्न हिस्सों से महाराष्ट्र, राजस्थान, दिल्ली, मध्यप्रदेश, तमिलनाडू, पंजाब, छत्तीसगढ़, बिहार, झारखण्ड, उड़ीसा, पश्चिम बंगाल, उत्तरप्रदेश और गुजरात जैसे राज्यों के अनेक शहरों से वीरायतन के कर्मठ कार्यकर्ता तथा भक्तगण पधारे और यू-एस-ए, केनेडा, लंदन, दुबई, मस्कत, ऑस्ट्रेलिया, सिंगापुर, केन्या जैसे विभिन्न देशों से प्रबुद्ध कार्यकर्ता तथा वीरायतन



के सहयोगी पधारे।

26 जनवरी 2023 को सूर्य ने धरती पर स्वर्णिम किरणों का जैसा सोना सजा दिया। नाच उठा वीरायतन का कण-कण। जगह-जगह पर स्वच्छता, सुंदरता और सजावट के सुमन खिल गए। श्रद्धा और भक्ति के पूजा थालों से सज उठा वीरायतन कच्छ का प्रत्येक कोना।

26 जनवरी की मंगल प्रभात सभी भक्तों ने उमंग, उल्लास और प्रेम से जन्मोत्सव की अनगिनत बधाइयाँ ताई माँ के चरणों में समर्पित की और भावविभोर होकर पूज्य ताई माँ की आरती करते हुए सभी गा उठे:-



गुरु पूजा- ताई माँ जन्मदिवस अभिनन्दन !

उसको नहीं देखा हमने कभी, पर उसकी जरूरत क्या होगी। गुरुवर तेरी सूरत से अलग, भगवान की सूरत क्या होगी। और ताई माँ का आशीर्वाद और प्रेम पाकर गदगद हो उठा उपस्थित प्रत्येक भक्तगण।

26 जनवरी की उल्लासपूर्ण सुबह में भारत के 74वें गणतंत्र दिवस के उपलक्ष्म में पूज्य ताई माँ एवं वीरायतन की समस्त



राष्ट्र ध्वज का सम्मान

साध्वीवृंद के सानिध्य में वीरायतन कच्छ के अध्यक्ष श्री सुन्दरजी भाई शाह ने वीरायतन के प्रांगण में तिरंगा लहराया। भारत माता के जयकार से संपूर्ण संकुल हरा, सफेद और भगवे रंग में रंग गया।

उसके पश्चात् नवनिर्मित ऑडिटोरियम का उद्घाटन कार्यक्रम था जो बहुत ही व्यवस्थित रूप से सभी मेहमानों की उपस्थिति में सम्पन्न हुआ। 600 लोगों का समावेश कर सके, वीरायतन कच्छ का यह



फरवरी-मार्च- 2023



अदानी ऑडिटोरियम के सहयोगियों का पूज्य ताई माँ द्वारा सम्मान



वीरायतन के मानद सदस्य श्री विपिन आनन्द जैन (दिल्ली) द्वारा ताई माँ के जन्मोत्सव पर ग्रामीण लोगों के लिए कम्बल वितरण

अनुमोदन की गई। तत्पश्चात् दिल्ली के विपिन आनन्द जैन के सहयोग से जरूरतमंद लोगों को कंबल वितरित किया गया। लाभान्वित जनता ने दोनों हाथ उठाकर पूज्य ताई माँ के दीर्घ आयु के लिए शुभकामनाएँ समर्पित की।

प्रातः 10:30 बजे वीरायतन की AGM आम सभा की मीटिंग थी, जिसमें पूज्य



श्री अमर भारती

ताई माँ, अध्यक्ष डॉ. अभय फिरोदिया, साध्वी संघ तथा कार्यकारिणी के वरिष्ठ सदस्यों के बीच महत्वपूर्ण विषयों पर चर्चा की गयी। वीरायतन की भावी योजनाओं पर भी विचार किया गया। नयी कार्यकारिणी समिति का करतल ध्वनि से स्वागत किया गया।



वीरायतन के वरिष्ठ कार्यकर्ताओं की उपस्थिति में वीरायतन का 'Future Plan'



श्री अमर भारती



**वीरायतन की स्वर्ण जयंती के शुभ अवसर  
पूज्य ताई माँ का अभिनन्दन करते हुए झूम उठी है जनता**

अपने आराध्य, भगवत् स्वरूप पूज्य ताई माँ का जन्मोत्सव कार्यक्रम जो था! कार्यक्रम का प्रारंभ हुआ- वीरायतन कच्छ की छात्राओं के द्वारा अत्यंत भावपूर्ण, समर्पण गीत की प्रस्तुति के साथ-



**कोटी-कोटी बंदन ताई माँ तमो ने,  
तमे पंथ साचो बताव्यो अमो ने।**

इस भावपूर्ण गीत के मध्य में छोटे-छोटे बच्चों ने ताई माँ को शॉल ओढ़ाकर, पुष्प अर्पित कर उनका अभिनन्दन किया और भाव अंजलि समर्पित करते हुए कहा-



**हे अर्पन, समर्पन ताई माँ तमो ने,  
तमे पंथ साचो बताव्यो अमो ने।**

पूरी सभा ने दीप प्रज्वलित कर अपने-अपने भाव सुमन पूज्य ताई माँ के चरणों में समर्पित किए और सम्पूर्ण वातावरण एक अनूठे श्रद्धाभाव से ओत-प्रोत हो गया।

जन्मोत्सव कार्यक्रम की अध्यक्षता- वीरायतन के अध्यक्ष डॉ. अभय फिरोदिया द्वारा की गयी और मंच पर ससन्मान उपस्थित थे- वीरायतन कच्छ के अध्यक्ष श्री सुंदरजी भाई शाह, राज सौभाग सत्संग मंडल के पूज्य भाई श्री, उपाध्याय यशा जी तथा जैना (USA) अध्यक्ष- श्री हरेश शाह।



जन्मोत्सव कार्यक्रम में डॉ. अभय फिरोदिया ने अपने प्रभावशाली वक्तव्य में कहा कि आचार्य श्री चन्दना जी द्वारा 'एक क्रांति जो शांति के साथ' निभाई गई; वह सचमुच- अनुकरणीय है। अपने 87 वर्षों के जीवन में आचार्य श्री चन्दना जी ने किसी भी कार्य को नामुमकिन नहीं माना।

उन्होंने बताया कि हम जितना आज का नहीं सोच पाते, आचार्यश्री जी उससे ज्यादा तो आने वाले 50 वर्षों तक की योजनाएँ तैयार कर लेती हैं और दूरदर्शिता एवं कर्मठता से उन योजनाओं के क्रियान्वयन में लग जाती हैं। उन्होंने कहा आचार्य श्री के जीवन का हर क्षण दुनिया के लिए अनूठी मिसाल है तथा वे नारी जाति का सर्वोच्च गौरव है।

आयोजन में विशेष अतिथि रहे श्री राज सोभाग सत्संग मंडल के पूज्य भाई श्री जिनकी सन्मानित एवं दिव्य उपस्थिति से सम्पूर्ण कार्यक्रम दीपितमान हो उठा था। आज के समय में आध्यात्मिकता की सही पहचान- पूज्य भाई श्री की सहजता, सरलता सभी को आकर्षित कर रही थी।

पूज्य भाई श्री ने ससम्मान ताई माँ को बधाई देते हुए कहा कि ऐसी दिव्य आत्माओं के समक्ष हमारी उपस्थिति ही हमारी जीवन की धन्यता है। वीरायतन और ताई माँ के कार्यों का किंचित् मात्र भी अनुकरण कर लिया जाए तो जीवन सार्थक हो जाए।

सम्मानित अतिथि के रूप में पधारे श्री हरेश शाह, अध्यक्ष जैना (अमेरिका) ने 'ताई माँ' को सहद्यता से शुभकामनाएँ देते हुए कहा कि ये श्री ताई माँ के ही प्रयास हैं, जो आज जैन धर्म, एक मानव धर्म बन सम्पूर्ण विश्व में एक कल्याणकारी परिवर्तन ला रहा है।

उपाध्याय श्री यशाजी महाराज ने ताई

माँ के जन्मदिन को जन्मकल्याणक दिवस बताया और कहा कि जिनका जीवन स्वः कल्याण के साथ पर कल्याण में समान रूप से निहित है, ऐसी दिव्य आत्माओं का जन्म कल्याणकारी होता है। उनके भावपूर्ण वक्तव्य से सभी की आँखें गीली हो उठी।

कार्यक्रम की शुरूआत साध्वी श्री



**श्री सुन्दर जी भाई शाह  
की पुत्रवधु श्रीमति शैली  
दिनेश शाह ने कृतज्ञता  
ज्ञापित की है, वीरायतन  
के सत्कार्यों में जुड़ने करने  
के अवसर के लिए**

लागनी एवं समर्पण की बात की और कहा कि वीरायतन का कार्य हमारे लिए प्रेरणा है।

कार्यक्रम के मध्य में कामाणी जैन भवन कलकत्ता के अध्यक्ष श्री प्रफुल्ल मोदी ने





**श्री चन्द्रबुद्ध देसाई, उनकी धर्म पत्नी श्रीमति ज्योत्सना देसाई द्वारा निर्मित- गीतांजलि के स्तर का काव्य समर्पित कर रहे हैं श्री ताई माँ को**

पूज्य ताई माँ का सम्मान किया और श्री चन्द्रबुद्ध देसाई ने उनकी धर्मपत्नी सौ. ज्योत्सना बेन देसाई द्वारा निर्मित एक अद्भुत कविता और पेंटिंग आचार्य श्री जी को जन्मदिवस के पावन अवसर पर समर्पित की।



पूज्य ताई माँ ने अपने आशीर्वचन में सभी के कल्याण की मंगल कामना करते हुए कहा कि सत्य अपने लिए, प्रेम दूसरे के लिए माँ के जीवन पर आधारित नाटिका तथा अनेक और करूणा सबके लिए रखनी चाहिए।

उन्होंने अपने जन्मोत्सव में वीरायतन को विश्वायतन बनाने की यात्रा का आह्वान किया और वीरायतन के कार्यकर्ताओं को शताब्दी महोत्सव तक इसी कर्मठता और सेवाभाव से कार्यरत रहने की प्रेरणा दी। पूज्य आचार्य श्री जी के शब्दों से उपस्थित प्रत्येक भक्त का मन नई ऊर्जा और चेतना से भर गया।

अत्यंत निपुणता से मंच संचालन किया, श्रीमति रीटा हरिया ने, जिनकी सुंदर वक्तृत्व शैली ने सभा में एक समां बांध दिया। इस मंगल अवसर पर जैन (USA) द्वारा श्री जय जैन को 'जैन एकता एवार्ड' से सम्मानित किया गया। पूरी सभा ने करतल ध्वनि से वीरायतन के लिए समर्पित इस युवा कार्यकर्ता का अभिनंदन किया।



**श्री जय जैन - 'जैन एकता एवार्ड' से सम्मानित**

शाम 7:00 बजे वीरायतन कच्छ के बच्चों द्वारा शानदार और हृदयस्पर्शी प्रस्तुति की गई, जिसमें नृत्य, वक्तव्य, काव्य और ताई माँ के जीवन पर आधारित नाटिका तथा अनेक प्रेरणात्मक कार्यक्रम प्रस्तुत किये गये।



**वीरायतन कच्छ के छात्र, भार्गव गुसाई उपलब्धियों के शिखर पर पहुंचकर कह रहे हैं- मैं आज जो कुछ भी हूँ वीरायतन के कारण से हूँ।**

वीरायतन कच्छ के शिक्षा केन्द्रों में पढ़ रहे बच्चों ने अपनी भावनाएँ व्यक्त करते हुए बताया कि कैसे वीरायतन के सहयोग से उनकी और उनके परिवार की जिंदगियाँ संवर गई हैं।

शून्य में से प्रारंभ हुई, वीरायतन विद्यापीठ में पढ़ रहे बच्चों की यात्रा, आज सफलता के शिखरों को छू रही है और वे बच्चे आज इंजीनियर, प्रोफेसर, बैंक अधिकारी, व विभिन्न कॉर्पोरेट क्षेत्र में अपना नाम कमा रहे हैं और वीरायतन कच्छ की सिद्धियों को गौरवान्वित कर रहे हैं।

वीरायतन ने हर एक उदास बच्चे की जिंदगी में खुशियों के दीप जलाए हैं और उन रोशन दीपों से सारा आलम जगमगा उठा था। भावविभोर हो गए लोग बच्चों की प्रस्तुति



देखकर, कितनी ही आँखें नम हो गयी, उनकी आत्मगाथा सुनकर।

हर बच्चे की आँख में खुशी, समर्पण, प्रेम और Thank you Tai Ma, Thank you वीरायतन के भाव थे।

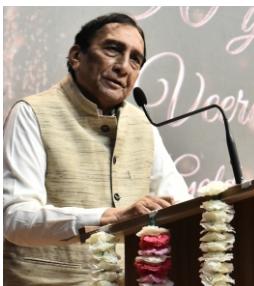
कार्यक्रम का संचालन श्रीमति तृप्ति ललवानी ने किया लेकिन हर प्रस्तुति के पाश्व के भावों को साध्वी श्री शिलापीजी ने अत्यंत सुंदरता और मधुरता से प्रस्तुत किया।

27 जनवरी, वीरायतन का स्वर्ण-जयंति महोत्सव! 50 वर्ष पूर्व जो सत्कर्म की दिव्य यात्रा प्रारंभ हुई थी, उस यात्रा ने शानदार 50 वर्ष पूर्ण किये। पूज्य गुरुदेव के आशीर्वाद से पूज्य ताई माँ ने जैन इतिहास में दीक्षित वर्ग



**देश-विदेश के प्रबुद्ध लोगों को चमत्कृत कर दिया है -  
वीरायतन, कच्छ के बच्चों की प्रस्तुति ने, जिन बच्चों की पीढ़ियों ने कभी स्कूल नहीं देखा।**

द्वारा सक्रिय सेवा के मार्ग का प्रारंभ किया। उस मार्ग पर अकेले चले और पीछे-पीछे कारवां जुड़ता गया और पूर्ण समर्पण के साथ आज तक जो चल रहे हैं उन सभी समर्पित कार्यकर्ताओं और श्रद्धालुओं का इस अवसर पर अभार व्यक्त करते हुए सम्मान किया गया।



**वीरायतन स्वर्ण जयंति  
अवसर पर पद्मश्री डॉ.  
कुमार पाल देसाई के  
भावपूर्ण उद्घार**

इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि पद्मश्री डॉ. कुमारपाल देसाई थे। अपने साहित्यिक अंदाज में वीरायतन को 50 वर्षों की यात्रा को नये युग के परिवर्तन की यात्रा कहा और शुभेच्छा दी कि सहस्र शताब्दि तक वीरायतन की मानवता की हितार्थ यात्रा अनवरत गतिमान रहे।

कार्यक्रम की अध्यक्षता डॉ. अभय फिरोदिया, अध्यक्ष वीरायतन ने बताया कि यह सफर आसान नहीं था। इसे आसान बनाया है पूज्य गुरुदेव उपाध्याय श्री अमर मुनि जी महाराज की दृढ़ता, दूरदर्शिता और अटल विश्वास ने तथा आचार्य श्री चन्दना जी की संकल्प शक्ति, निररता और महावीर की वाणी को और उनके जीवन को यथार्थ रूप से दुनिया तक पहुंचाने की सोच ने।

डॉ. अभय फिरोदिया जी ने अपने उद्बोधन में कहा “ताई माँ ही वीरायतन है और वीरायतन ही ताई माँ”। उन्होंने पूज्य ताई माँ के साहस और दृढ़ता की सराहना की और कहा कि पूज्य ताई माँ के आशीर्वाद एवं मार्गदर्शन से वीरायतन के कार्य शताब्दियों तक अमर रहेंगे और अविरत चलते रहेंगे।

विशेष अतिथि के रूप में पधारे पूज्य भाई श्री ने कहा कि वीरायतन सम्पूर्ण मानव जाति के लिए वरदान है। विश्वभर में फैली वीरायतन की शाखाओं ने अकल्पनीय कार्य कर दिखाये हैं।

सुवर्ण जयंति के इस स्वर्णिम अवसर पर अमेरिका, लंदन, न्युयार्क, कनाडा, केनिया, दुबई, नेपाल, यु०के०, और भारत के विभिन्न प्रांतों- कलकत्ता, आगरा, मेरठ, सूरत, मुम्बई, जोधपुर, दिल्ली, चेन्नई, घोड़नदी, बिहार, राजकोट आदि सभी जगहों से पधारे हुए अतिथियों को अत्यंत भाव से सम्मान किया गया।

इस कार्यक्रम का बहुत ही विनम्र व अनुशासित संचालन साध्वी श्री शिलापी जी महाराज द्वारा किया गया। स्वर्ण जयंति के इस महत्वपूर्ण प्रसंग पर पूज्य ताई माँ के जीवन और वीरायतन की उपलब्धियों पर एक फिल्म प्रस्तुत की गयी- “जुगनू”, जो वीरायतन की 50 वर्ष की यात्रा का एक बहुत ही सुन्दर प्रस्तुतिकरण था।



शाम को 7:00 बजे Tannariri Musical Group द्वारा एक सुंदर ‘रंग-रंगिलो गुजराती’ कार्यक्रम का आयोजन किया गया। पूरे गुप ने जो समां बांधा, उससे हर कोई थिरकने को आतुर हो गया।

सौ. श्री प्रियंका जी, भावेश दवे तथा उनके सहयोगियों ने शानदार गीतों की प्रस्तुति दी तथा डांस ग्रुप के द्वारा अत्यन्त खूबसूरत नृत्य प्रस्तुत किये गये। भाग्येश भाई द्वारा कार्यक्रम का संचालन किया गया; उन्होंने अपने काव्य, हास्य, गीत, गजलों एवं आनन्द से भरपूर प्रस्तुति से सभी को उत्साहित कर दिया।



**तानारिरि म्यूजिकल ग्रुप द्वारा अद्भुत प्रस्तुति**



**समर्पित है सम्पूर्ण जीवन वीरायतन मार्ग पर  
दीक्षार्थी कुमारी झलक जैन**

28 जनवरी की सुबह- त्याग की सुबह, समर्पण की सुबह, गुरु प्रेम की सुबह- उगते सूर्य की लाली दीक्षार्थी झलक जैन के त्याग के रंग को और अधिक तेजस्वी बना रही थी। 28 तारीख को कुमारी झलक जैन अपने परिवार एवं गुरुवर का आशीष लेकर भगवती



**निमिर जीवन यात्रा का आरंभ**

दीक्षा के मार्ग पर आरूढ़ हुई। ऐसे तो दीक्षा महोत्सव का मंगल प्रारंभ 23 जनवरी से हुआ- 23 जनवरी को माला मुहूर्त के मंगल प्रसंग पर दीक्षार्थी को माला पहनाकर शुभ आशीष दिए गए। 24 जनवरी मंडप मुहूर्त हुआ। मंडप मुहूर्त



में स्थानीय महिला मंडलों ने संगीत से उत्सव को रंगीन बनाया और दीक्षार्थी की उल्लास से साझी गाते हुए अभिनंदन किया गया।

25 जनवरी को दीक्षार्थी की मेहंदी, रचाई गई, इस अवसर पर मांडवी से आये महिला मंडल ने मधुर गीतों से दीक्षार्थी का बहुमान किया तथा पूज्य ताई माँ ने दीक्षार्थी के हाथों पर मेहंदी से हस्ताक्षर किये।



28 जनवरी की सुबह दीक्षा का भव्य वरघोड़ा 72 जिनालय से प्रारंभ होकर गाजे-बाजे व नृत्य उत्सव के साथ दीक्षा मंडप



में प्रविष्ट उठा। दीक्षार्थी का उत्साह देखते ही बनता था। चहुं और दीक्षार्थी अमर रहे के नारे गूंज रहे थे। वर्षोदान करते हुए आनन्द विभोर भावों से दीक्षार्थी झलक जैन ने नृत्य करते-करते दीक्षा मंडप में प्रवेश किया। दीक्षित जीवन में प्रवेश करने का कुमारी झलक का उत्साह देखते ही बनता था। ऐसा आनंद, ऐसी प्रसन्नता। जैसे पूरे संसार का वैभव, खुशियाँ उसे प्राप्त हो रही हो। दीक्षा का वह विशाल मंडप जन-समूह से भर गया था। प्रत्येक व्यक्ति करतल ध्वनि एवं जयकारों के साथ दीक्षार्थी का स्वागत कर रहा था।

मंच पर आसीन पूज्य आचार्य श्री चन्दना जी व समस्त साध्वी संघ ने कुमारी झलक को अपना आशीर्वाद प्रदान किया। दीक्षा के इस पुण्य अवसर पर मंच पर उपस्थित थे-

सिंगापुर जैन संघ के अध्यक्ष- श्री परेश टिम्बडिया, दुर्बई जैन संघ के प्रतिनिधि- श्री योगेश भाई दोशी, अमेरिका से पधारे- श्री कनक गोलिया एवं श्री प्रभा गोलिया, वीरायतन इंटरनेशनल के सदस्य श्री योगेश बाफना, नैरोबी से श्री भरत भाई दोशी, श्री



विनय भाई, लंदन से श्री नीलेश भाई शाह,

नेपाल के श्री कविन्द्र नाथ मोदी, वीरायतन इंडिया से श्री शांति भाई मैकोनी, श्री सुंदरजी भाई शाह, श्री टी.आर. डागा, श्रीयुत् भावना बेन, मोम्बासा से श्रीमति नीलम बेन इत्यादि अनेक महानुभावों की उपस्थिति से मंच सज्जित था।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि MP श्री विनोद भाई चावड़ा ने अपने उद्बोधन में कहा कि मोह-माया, धन वैभव सब त्याग कर संयम पथ पर आरूढ होना अत्यन्त कठिन है और विरले लोग ही इस पथ पर बढ़ सकते हैं।

विशिष्ट अतिथि के रूप में मांडवी-मुंद्रा के MLA श्री अनिरुद्ध दवे जी उपस्थित रहे, उन्होंने कहा कि वीरायतन के प्रत्येक साध्वी अपने में एक कोहिनूर है और कुमारी झलक को शुभकामनाएँ प्रेषित करते हुए कहा

कि आपका संयम जीवन निष्कंटक रहे।

कार्यक्रम की अध्यक्षता वीरायतन कच्छ के चेयरमेन श्री सुन्दर जी भाई शाह द्वारा की गई। उन्होंने कहा कि आचार्यश्री चन्दना जी एक अमर दीप है और उनके पदचिन्हों पर चलने वाले प्रत्येक व्यक्ति सौभाग्यशाली है तथा कुमारी झलक को उन्नत संयम जीवन के लिए शुभ भावनाएँ प्रेषित की। पूज्य आचार्य श्री चन्दना जी ने इस पावन अवसर पर अपने सरल, सारागर्भित शब्दों में अनुव्रत एवं महाव्रत के अंतर को विस्तार से समझाया और दीक्षा सूत्र के अर्थ का भी सुंदर विवेचन किया।

इसके बाद कुमारी झलक ने अत्यंत सुंदर, प्रभावशाली ढंग से अपने भावोदगार प्रस्तुत किए। नम हो गयी वहाँ उपस्थित प्रत्येक श्रद्धालु की आँखें- ऐसा सुंदर संकल्प, ऐसा सुंदर भाव- जिनशासन का भावी चमकता सितारा।





विदाई लेते हुए, दीक्षार्थी झलक के भावपूर्ण उद्गार

तत्पश्चात् गुरुजन और संघ का आशीर्वाद प्राप्त कर कुमारी झलक जैन अपने गृहस्थ वेश को त्याग कर अत्यंत उत्साह और आनंद के साथ साधुवेश में आचार्य श्री जी के चरणों में अपना जीवन समर्पित करने के संकल्प के साथ मंडप में आई।

दीक्षार्थी झलक को केश लोचन और वेश परिवर्तन कर जब सभा मंडप में लाया गया तब सबकी आँखें नम थीं पर दीक्षार्थी झलक का चेहरा त्याग और संयम के तेज से चमक रहा था और एक अनूठी, दिव्य खुशी उसके चेहरे पर झलक रही थी।



मुझे चलना है, प्रभु के मार्ग पर-  
गुरु का आशीर्वाद, संबल है मेरा।

कुमारी झलक ने एक प्रेरक कदम उठाते हुए अपने बाल कैंसर पीड़ितों को दिये जाने की घोषणा की जिसे सुनकर सब भाव विभोर हो गए। आचार्य श्री चन्दना जी ने बड़े ही प्रेमपूर्ण भाव से दीक्षार्थी की विधि पूर्वक भगवती दीक्षा सम्पन्न करवाई।

और नए वेश व नए पथ के साथ नया नाम प्रदान किया- साध्वी श्री प्रणीति जी।

नूतन साध्वी श्री प्रणीति जी को प्रथम चादर (वस्त्र दान) समर्पित (बहराने का) करने का लाभ श्री सुंदर जी भाई शाह परिवार एवं श्री शांति भाई मैकोनी परिवार ने लिया।

प्रथम ज्ञान ग्रंथ (पोथी) बहराने का लाभ-अमेरिका से पधारे श्री कनक गोलिया एवं श्रीमति प्रभा गोलिया ने लिया। पात्र बहराने का लाभ श्री योगेश भाई दोशी, (दुबई) तथा श्री भरत भाई दोशी (नैरोबी) ने लिया। नव दीक्षित को आहार बहराने का लाभ उपस्थित सभी भक्तगणों एवं श्रद्धालुओं को मिला। बहुत ही सम्मान, प्रेम, वंदनीय भावों के साथ दीक्षा कार्यक्रम सफलता से सम्पन्न हुआ।

वीरायतन कच्छ में आयोजित सम्पूर्ण त्रिदिवसीय कार्यक्रम में आवास, प्रवास, भोजन, स्वागत कमिटी व कार्यक्रम संचालन- संयोजन की सभी व्यवस्थाएँ बहुत ही, अनुशासित, अनुमोदनीय, शानदार रही। स्वच्छ रमणीय एवं प्राकृतिक वातावरण अत्यन्त आकर्षक रहे। ऐसे आयोजन सबके लिए एक सीख, एक प्रेरणा,



एक उदाहरण प्रस्तुत करते हैं।

इस कार्यक्रम की सफलता में वीरायतन के सम्पूर्ण साध्वी संघ की मेहनत के के साथ पूज्य ताई माँ के आशीर्वाद से विशेष



श्री चन्दना जी ना  
माशीर्वाद थी

झलक जैन  
दीक्षा व

ते,  
३ : २८ / ०१

श्रीयुत कनक गोलिया एवं श्रीमति प्रभा गोलिया- पिछले 18 वर्षों से पूज्य ताई माँ को समर्पित।  
ताई माँ के प्रत्येक संकेत को शिरोधार्य करके आगे बढ़े हैं। पूज्य ताई माँ के 87 वें जन्मोत्सव

पर आयोजित दीक्षा समारोह में नव दीक्षित साध्वी श्री प्रणीति जी को ज्ञान-दान का सुंदर लाभ।

रूप से साध्वी श्री शिलापी जी के अथक परिश्रम, समर्पण, व्यवस्थित कार्यशैली और अनुभव से ऐसा ऐतिहासिक आयोजन सम्भव हो सका। सांस्कृतिक कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए साध्वी सुमेधा जी का योगदान भी सराहनीय रहा। अत्यंत समर्पण भाव से साध्वी मनस्वी जी भी कार्यक्रम के अभिन्न अंग रहे। पूज्य ताई माँ की प्रेरणा से श्री अनिल भाई जैन (एडमिनिस्ट्रेटर) वीरायतन, कच्छ के



श्री अमर भारती

अनन्य सहकार से वीरायतन कच्छ की पूरी टीम का मेनेजमेंट और coordination काबिले तारीफ और अनुकरणीय रहा। इस त्रिवेणी महोत्सव के सम्पूर्ण कार्यक्रम में अपने पवित्र, सुमधुर और मोहक कंठ से मंगलाचरण एवं गुरु स्तुति से साध्वी श्री संघमित्रा जी ने इस महोत्सव में प्रभु प्रेम और गुरु समर्पण के अनूठे रंग भर दिये।

वीरायतन के अनेक कार्यों की तरह यह महोत्सव भी ऐतिहासिक रहा। उपस्थित न रह सके भाविकों के लिए श्री जय जैन के सहयोग से YouTube से जीवंत प्रसारण भी किया गया, जिससे हजारों लोगों ने अपने घर में ही इस महोत्सव का आनंद मनाया। इस कार्यक्रम में प्रत्यक्ष और परोक्ष रूप से कार्य करने वाले सभी कार्यकर्ताओं का वीरायतन परिवार ने सहदय से सम्मान किया।

आचार्यश्री जी का सक्षम साध्वी संघ,



वीरायतन के सभी केन्द्रों के कार्यकर्ता, वीरायतन के कर्मयोगियों की प्रसन्नता और ऊर्जावान कार्यशैली आगुन्तकों के लिए मिसाल बन गई। पद्मश्री आचार्यश्री जी का यह कारबां निरंतर वृद्धि करे और आगे बढ़ता रहे... चरैवेति..... चरैवेति..... चरैवेति.....

कार्यक्रम के दौरान पद्मश्री आचार्य

चन्दनाजी ने वीरायतन की भावी योजनाओं का उल्लेख किया, जिसमें मुख्य रूप से युद्ध के विध्वंस परिणामों को वर्षा से झेल रही दुनिया को आगाह कर परिवर्तन का संदेश देने की बात कही, जिसमें अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर सेमिनारों का आयोजन कर सम्पूर्ण विश्व में अहिंसा, प्रेम, मैत्री, भाईचारे और मानवता के हितार्थ, सम्पूर्ण प्राणी जगत के कल्याणार्थ अनेक ठोस कदम वीरायतन द्वारा उठाये जाने की घोषणा की। 'World without War' प्रोजेक्ट पर काम करने का विशेष आह्वान किया।

**“धन्य ये सेवा का मंदिर,  
धन्य यहाँ की परिपाटी है  
अमर दीप सी प्रत्येक साध्वी,  
हर सदस्य उज्ज्वल बाती है,  
वर्तमान की ‘वीरा’  
आचार्य चन्दना जी ‘कर्मवीरा’  
मानवता की अमर थाति है।”**



### मानवता के अमर पथ की "कर्मवीरा"

पद्मश्री आचार्य डॉ. चन्दनाश्रीजी

She, the embodiment of sacrifice  
She, the blessing in disguise  
She, the epitome of self-less love  
She, the one who's always above  
She, the humble guide to thrive  
She, the one who keeps us alive  
She, the best companion to rely on  
She, the only shoulder to cry on  
She, the savior of compassion  
She, the one with enormous passion  
She, the brave courageous fighter  
She, the soft and gentle writer  
She, the pre-eminent inspiration  
She, the life's strong foundation  
She, the indescribable miracle  
She, the point of pinnacle  
She, the perfect example or instance  
She, the essence of my existence  
She, the perfection like no other  
She, yes she, is Tai Maa, my mother

- With love and regards, Jheel Bothra



## युगदृष्टा श्री ताई माँ : आगामी 50 वर्षों तक है जिनकी दृष्टि

- पूज्य भाई श्री- सायला

आज ताई माँ के 87वें जन्मदिन के शुभ अवसर पर मेरा यहाँ आना हुआ, इसका मैं अत्यन्त आनन्द अनुभव कर रहा हूँ और ताई माँ को बन्दन करके उनके सुखद आरोग्य और दीर्घ आयु के लिए प्रभु से प्रार्थना करता हूँ। मैं अत्यन्त भाग्यशाली हूँ कि मुझे ताई माँ के रूप में एक बड़ी बहन मिली है। भारत का ही नहीं विश्व का सौभाग्य है कि इस पंचमकाल में ताई माँ जैसी विभूति जो ज्ञान, प्रेम और करुणा की प्रतिमूर्ति है ऐसी महत् शक्ति का शरण प्राप्त हुआ है। आपका प्रेम एवं आशीर्वाद पाकर मैं धन्य हुआ हूँ।

चौदह वर्ष की उम्र में दीक्षित होकर और बारह वर्ष तक मौन रहकर आपने आन्तरिक विशुद्धि पायी है। दर्शन, शास्त्र, न्याय, व्याकरण में दक्ष ताई माँ धर्म और धर्म सिद्धांतों को गहराई से जानती है और समाज को भी दिशानिर्देश देती है। वे जैन इतिहास में प्रथम साधी हैं जिन्हें आचार्य पद का सम्मान प्राप्त हुआ है।

मेरा एक अनुभव बताता हूँ कि शिकागो में हमारी एक मुमुक्षु बहन हर्षबेन रहती है जो सायला आश्रम से जुड़ी हुई है और अपने पुरुषार्थ से उच्च पद तक पहुंची है। जब भी ताई माँ शिकागो पधारती है, उनके घर ही

बिराजती है। हर्षबेन इतनी सुन्दरता से वर्णन करके बताती है कि 'ज्ञानसार', 'अध्यात्मसार' जैसे महत्वपूर्ण ग्रन्थ जो आध्यात्मिक उन्नति के पथ प्रदर्शक हैं ताई माँ ने उनको खूब सरलता से समझाये हैं। उसका हर्षबेन को खूब आनन्द है।

परम पूज्य उपाध्याय श्री अमर मुनिजी से प्राप्त बोध और उनके प्रति भक्ति का यह फल है। आपने दीन, दुःखी और दरिद्र लोगों को संभाला है। आपके हृदय में जो प्रेम है वह मनुष्य के मन के तथा शरीर के घावों को भर देता है। ताई माँ! आपमें वे सभी गुण हैं जो एक आध्यात्मिक मार्गदर्शक में होने चाहिए। आपके सक्षम नेतृत्व में वीरायतन ने इन पचास वर्षों में जो प्रगति की है कोई सोच भी नहीं सकता। प्राचीन मूल्यों को संभालते हुए आधुनिक शैली को अपनाकर लोकसेवा के व्यापक कार्य आपने किये हैं। लक्ष्य स्थिर करके उस दिशा में पुरुषार्थ और सबको साथ में जोड़कर आगे बढ़ने की आपकी रीति अद्भुत है। जो मैं कह रहा हूँ वह अपने अनुभव के आधार पर कह रहा हूँ। मैंने देखा है, मैंने अनुभव किया है कि वे जीवन में गहन रूप से केन्द्रित हैं, इसी कारण उनकी सोच, उनके कार्य आत्मकल्याण करने में समर्थ है। उनका पवित्र प्रेम, उनका

आशीर्वादपूर्ण स्पर्श एक ऐसी शक्ति है जो व्यक्ति को सकारात्मक बना देती है। उनकी पावननिश्चा में आते ही जीवन में सेवा की, सद्भावना जगा देती है। उनकी पावननिश्चा में आते ही जीवन में सेवा की, सद्भावना की ऊर्जा प्रकट होती है। उनका हृदय कोमल है परन्तु उनके कार्य प्रबल है।

कच्छ भुज में वर्षों से मेरा आना-जाना रहा है। मैंने धरतीकम्प से पूर्व भी कच्छ को देखा है और बाद में भी जो विकास हुआ है यहाँ पूरे कच्छ में बड़ा परिवर्तन हुआ है, बड़ा आशीर्वाद है। और इस आशीर्वाद का बहुत बड़ा भाग पूज्य ताई माँ का है। यहाँ भले ही अनेक इन्डस्ट्रीज आयी, लोगों को रोजी-रोटी के पूरे साधन मिले। पर यह जो वीरायतन की संस्था यहाँ स्थापित हुई, उससे लोगों को प्राथमिक शिक्षा से लेकर उच्चशिक्षा तथा संस्कार प्राप्त हुये हैं। हजारों लोग शिक्षा पाप्त कर आत्मनिर्भर हुए हैं और हो रहे हैं। यह ताई माँ की दीर्घदृष्टि का सुपरिणाम है।

कल मैं जब यहाँ आया तब मैंने सुना कि ताई माँ मीटिंग में बोल रही थी, और वे कार्यकर्ताओं से पूछ रही थी कि अगले पचास वर्षों में हम क्या करेंगे? सौ वर्षों के बाद वीरायतन किस ऊँचाई पर होगा? कितना जबरदस्त है उनका विजन, उनका साहस जो हमेशा हमसब देखते आ रहे हैं। वे बढ़ती हैं आगे और लोगों में उत्साह भरती हैं।

अद्भुत है उनका आत्मविश्वास इस 87 वर्ष की उम्र में भी अगले सौ वर्ष की सोच एवं उसकी प्लानिंग। हम उनके शिष्य वर्ग साधिव्यों को देखते हैं, उनकी कार्यक्षमता, निष्ठा, कुशलता जैसे कई उत्तम गुण उनमें दिखाई देते हैं। हमारे गुरुदेव कहते हैं कि जिनकी आध्यात्मिक दशा ऊँची होती है उन्हें भारत के एक-एक स्टेट की जिम्मेदारी उठानी चाहिए। मुझे लगता है यह कार्य पूज्य ताई माँ खूब जबरदस्त रूप से पूर्ण कर रही है या है। यह कार्य 50 वर्ष तो क्या 50 वर्ष के लिए कार्य करनेवाला साध्वीसंघ भी उन्होंने तैयार की।

वीरायतन अर्थात् सेवा और साधना का उत्सव। वीरायतन अर्थात् समय और साधनों का उत्तम सदुपयोग। वीरायतन अर्थात् दीन दुःखियों की पीड़ा हरने का प्रयास। और वीरायतन अर्थात् प्रेम, धैर्य और पूर्ण समर्पण के साथ कार्य की क्रियान्विति।

वीरायतन के कार्यों से हम सब प्रेरित और प्रभावित हैं। ताई माँ के लिए भावोर्मियाँ लगातार एक के बाद एक उठती जा रही हैं। ताई माँ के 87 वें जन्मदिन के पावन प्रसंग पर बन्दन करता हूँ। वीरायतन के 50 वर्ष स्वर्ण जर्यति का प्रसंग है और दीक्षा महोत्सव है। बेटी झलक को बहुत बधाई देता हूँ। साधना, सेवा और शिक्षा वीरायतन के इन उद्देश्यों पर चलकर वह अपना जीवन सफल करेगी। ताई माँ का यह संघ बड़ा और बड़ा होता रहे। यह

शुभकामना है। सबका कल्याण हो।

सबका मंगल हो। सब जीवन शान्त और सुखी रहे।

एक-दूसरे के कल्याण में लगे रहे। हर कोई



## जन्मदिन की शुभकामना

मानवता ना मसीहा, आचार्य आर्याश्री चन्दनाजी!

आपनो जन्मदिन अने उपाध्याय प्रवर प्रेरित वीरायतन नी गोल्डन ज्यूबली स्व-पर कल्याण मां परम निमित्त रूप बनी रहे। ऐकी मंगलोत्तम भावना। आपनु स्वास्थ्य 'आरुग्ग बोहिलाभ' ने पामे। जे लक्ष्य अने चिन्तननी गहराई मां करुणा भावना नो अहसास थतां सेवार्धम अपनावी अनेकों ना तारणहार बन्या छो।

नव वर्ष मां सम्यक् चिन्तन धारा अने गुरुगम ना सम्यक् ज्ञानना सहारे सर्वना तारणहार बनी अजन्मापदना संकल्पे यात्रा सम्पन्न बने तेवी अहर्निश भावना।

1977 मां उपाध्याय प्रवर श्री अमर मुनिजी महाराज ना दर्शन अने अमना सानिध्य मां पर्युषण पर्व नी आराधना नो लाभ मने प्राप्त थयो हतो त्यारे आपश्री नो पण लाभ मल्यो हतो।

आपनु अवतरण आपश्री ना आत्माने अरहन्त बनावे तथा आपश्रीनी स्व-परनी करुणा जन्मकल्याणक ना ऊंचाई ने पामे अेज मनोभावना।

—धीरज मुनि

सत् चित् आनन्द स्वरूप प्रभु महावीर के पथ का पथ प्रदर्शन करनेवाली श्रद्धेय ताई माँ! पंचमिया परिवार के कण-कण में विराजमान प्रिय ताई माँ!

आपके 87वें जन्मकल्याणक दिवस पर आपके चरणों में अगणित बन्दन अभिनन्दन।

हम सब बहुत भाग्यशाली हैं कि हमें आपका सानिध्य प्राप्त हुआ है और हमारी आपके चरणों में प्रार्थना है कि इसी तरह जन्मों-जन्मों तक हम आपके अन्तेवासी बनकर रहे।

आप मेरे हृदय में विराजमान हो जब भी स्मरण करती हूँ आप मेरी आंखों के सामने दृश्यमान रहते हो। कोटि-कोटि बन्दना, खूब-खूब बन्दना।

—संध्या चन्द्रवदन पंचमिया, कलकत्ता

प्रति,

पूज्य आचार्य श्री चंदनाजी,  
वीरायतन,  
राजगढ़ी  
जि. नांदा  
बिहार - ८०३११६

सेवामूर्ति, सद्भावमूर्ति, स्वृतिमूर्ति पूज्य आचार्याश्रीजी,  
मैत्री अने कड़वा धर्मने सेवाये साकार भनाए, जन-उत्तर्धनी ज्वरता आगृत करी, ज्वन समर्पित करनार; शिक्षा, स्वास्थ्य,  
साधना अने आध्यात्मिकता द्वारा मानवजीवनी प्रेमाण संभाषण राखनार अंवा आपश्रीनी ८६ भी जन्मजयंतीना भंगवधमय दिवसे  
अंतःकरणपूर्वक बन्दन अने अभिनन्दन।

शांतिनी शीतलता अने चेतनानी उमाभरी प्रवृत्तिओनी प्रेरका अने कार्यान्वयिता द्वारा आपे जगावेलो प्रेमयज्ञ प्रभावशालीइपे  
लाखों लोडोंने लाभदायक बनी रखी छे, तेमना ज्वनमां दृपांतरक्ष अने सशक्तिकरणी प्रक्रियानो प्रारंभ तेमज विकास करी  
रखी छे। ज्योत से ज्योत ज्योत ने अनुरूप सक्षम दीमनु पथ आपे निर्भाष कर्तु छे, के आ भंगण प्रवृत्तिओनी अंधजानो  
आधार बनी रहेथे।

राजकीय, सामाजिक अने संस्थाकीय बोनो पारितोपिकोनी वक्तव्यर आपने अपित करे छे अने आप अे भधायी पार, प्रशंसाअंगोशी  
उपर, ज्ञानियतमंदीता नक्कर सुधार भाटे सालस, दूरदृष्टिता अने सुसंचालने साथे लई सक्षियताने सञ्चण अने व्यापक  
बनावावामां अंकाज चिरे व्यस्त अने भस्त रखी छो।

आपनी पवित्रता अने वत्सलताना आशीर्वाद प्राप्त करवानो अमूल्य लाभ अमने भाष्यो छे; आपना सद्भावनी सुर्गंध अमने  
भजानी रहे छे, एं प्रेमधारा वहावता रहेथो! आ जैक दये पक्ष युवानीनां लोभ अने ज्ञेश्वरी आपनी कार्यशीलता के ग्रन्ति साधी  
रही छे, ते वर्धमान रहे; आपनु स्वास्थ्य नियमय रहे, आपनु ज्वन सुटीर्व बनी रहे, संयोगोनो सहायक सक्षम साथ आपने  
भग्नो रहे, एं अंतर अभिवापा।

आपनी उत्सवभरी उपस्थितिनी प्रतीका छे।

परमहृपाणुदेव श्रीमद् राजवंदननु योग्यका जगतनु कल्याण करो।

आपनी गुणसमृद्धिने प्रशाम सह,

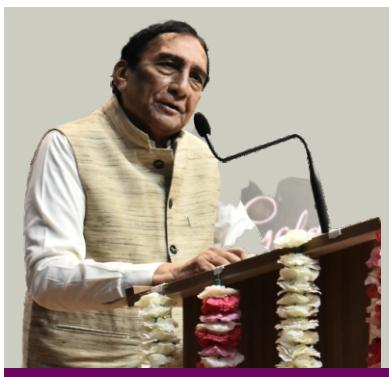
*Signature*

(पूज्य गुरुदेवश्री राजेश्वरी)

ता. २६.०९.२०२३

International Headquarters: Shrimad Rajchandra Ashram, Mohangadh, Dharampur-396050,  
District-Valsad, Gujarat, India. | Tel. no. : +91 72850 40000 | Website: [www.srm.org](http://www.srm.org)

Mumbai Spiritual Centre: Patel Chambers, 5<sup>th</sup> Floor, Plot No. 13, Mathew Road, Opera House, Mumbai - 400004, India.  
Tel. no. : +91 22 4002 5377 | [info@srmd.org](mailto:info@srmd.org)



## सेवा, शिक्षा और साधना के त्रिवेणी संगम पर निर्मित वीरायतन नारी शक्ति के प्राकट्य हेतु हुई शांत क्रांति

- कुमारपाल देसाई

एक समय जिस भूमिपर अहिंसा का जयघोष गूँजता था वहाँ कुछ वर्ष पूर्व चतुर्दिक हिंसा का दावानल सुलग रहा था। एक समय जिस राजगृह नगरी से विश्वशान्ति और मानवकल्याण की पवित्रवाणी जन-जन के हृदय में शुद्धता और सात्त्विकता जगा रही थी, उसी धरती पर जंगलों में प्राणियों का क्रूर शिकार हो रहा था। एक समय राजगृह नगरी की वैभारगिरि की तलहटी में समवसरण में भगवान महावीर की सर्वकल्याणकारी देशना (वाणी) प्रवाहित हुई थी, उसी स्थान पर हिंसा, अनाचार, गरीबी और बीमारी ने अपना डेरा डाल दिया था। कल्पना करना भी मुश्किल था कि कभी भगवान महावीर की वाणी यहाँ गूँजी थी। परन्तु समयचक्र गति और इतिहास के परिवर्तन से भूमि उज्जड़ बन गई थी।

ऐसे समय में एक क्रान्तदृष्ट्या मुनि उपाध्याय श्री अमरमुनिजी महाराज की दृष्टि जब उस भूमि पर गई तो उन्होंने आह्वान किया समाज को

**“भगवान महावीर की निर्वाण शताब्दी पर अगर एक नन्दादीप प्रज्ञवलित हो तो वह समस्त मानवजाति के कल्याण का मार्ग प्रशस्त करता रहेगा। प्रभु महावीर का कल्याणकारी मंगल संदेश अवश्य सम्पूर्ण विश्व में फैलना चाहिए।”**

उपाध्यायश्री जी की दृष्टि समग्र मानवजाति के समन्वय पर आधारित थी। प्रश्न है उस दृष्टि को कौन प्राप्त कर सकता है? गुरु की इस भावना को कौन साकार कर सकता है? इस प्रकार के प्रश्न उपस्थित होने के पूर्व ही दार्शनिक और निर्भिक शिष्य श्री चन्दनाश्रीजी ने बन्दन पूर्वक गुरुदेव से आज्ञा की मांग करते हुए कहा, “गुरुदेव आपकी भावना को साकार करने के लिए मैं समर्पित हूँ।”

गुरुदेव का पूर्ण विश्वास था उनपर कि उनके लिए कोई भी कार्य असम्भव या अशक्य नहीं है। और अल्पकाल में ही राजगृह के वैभारगिरि की तलहटी में वीरायतन साकार होना प्रारम्भ हुआ। वीर का अर्थ महावीर और

आयतन का अर्थ है पवित्र स्थान। और धीरे-धीरे 2500 वर्ष पूर्व की भूमि की पवित्रता पुनः प्रकट होने लगी।

इसके पूर्व साध्वी श्री चन्दनाश्रीजी ने दर्शनशास्त्र के ग्रन्थों का गहन अध्ययन किया था। उस समय उन्होंने अनुभव किया था कि एक ओर धर्म की उन्नतवाणी बहती है और दूसरी ओर समाज हिंसा और दुराचार में ग्रस्त है। कहीं चिकित्सा के अभाव में अंधत्व तो कहीं पोलियो की जीवनभर की पीड़ा। आचार्यश्री का मनोमन्थन चलता रहा कि जब तीर्थकर महावीर का सम्पूर्ण जीवन और दर्शन करुणा से परिपूर्ण है तो बस मुझे महावीर की भूमि पर मानवोन्नति की करुणाधारा बहानी है।

आदिवासी भूखण्ड पर वीरायतन को रूपायित करने में अनेक संकटों का सामना किया। शिकार को सामान्य माननेवाले लोगों को प्राणीमित्र बनाया। यह कार्य सामान्य नहीं था। इसके लिए उन्होंने शिकारियों का सामना किया। कभी प्राणियों को ले जाते ट्रकों के सामने खड़ा रहना पड़ा। एक शिकारी ने उन्हें कहा “तुम क्यों अपने प्राणों को संकट में डालती हो?” तब साध्वी श्री चन्दनाजी ने कहा, “दूसरों के प्राण बचाने के लिए मैं अपने प्राण न्योछावर करने के लिए तैयार हूँ।” ऐसी अनेक घटनाएँ घटती रहीं और साध्वीश्री का जीवन सुवासित होता रहा।

वीरायतन के प्रचार का प्रारम्भ उन्होंने 1971 में “वीरायतन बालिका संघ” से किया। नारी शक्ति के दृढ़ विश्वास का यह प्रतीक था। फिर तो वीरायतन के तार भावना से जनसमूह के साथ जुड़ते गये। समवसरण भूमि पर 1974 में निःशुल्क नेत्र चिकित्सा (आई ऑपरेशन) से वीरायतन की शुरुआत हुई।

एक समय में उनका विरोध करती आदिवासी प्रजा में धीरे-धीरे साध्वीश्रीजी की सेवा भावना के स्पर्श ने सद्भावना जगा दी। अपने गुरु और जीवन दर्शक उपाध्याय श्री अमरमुनिजी के 80वें जन्मदिन पर “श्री ब्राह्मी कला मंदिरम्” नाम से जैन धर्म के बोधक प्रसंगों का म्यूजियम बनाया। इस ब्राह्मी नाम में भी एक संकेत है। ब्राह्मी भगवान ऋषभदेव की पुत्री थी जो 14 भाषा की जानकार थी। उसके द्वारा रचित लिपि विश्व की प्राचीन लिपियों में एक है।

नेत्र चिकित्सा के कार्य को स्थायी रूप देने के लिए “नेत्र न्योति सेवा मंदिरम्” (आई हॉस्पिटल) की स्थापना की। और धीरे-धीरे आस-पास के लोगों में श्रद्धा जागृत होने से वे गुरुमां श्री सुमति कुंवरजी मां के प्रवचन में आने लगे। फलतः हजारों लोगों ने शराब, शिकार और मांसाहार का त्याग किया।

1987 की 26 जनवरी को एक ऐसा अनुपम प्रसंग बना कि उपाध्याय श्री अमरमुनिजी महाराज ने साध्वीश्री चन्दनाजी को

उस गरिमापूर्ण ‘आचार्य’ पद से सम्मानित किया जो पद केवल साधुओं तक ही सीमित था। इसके बाद आचार्यश्री चन्दनाजी ने विदेश की धरती पर जाकर भारतीयों को आह्वान किया “मातृभूमि की संस्कृति और संस्कारों को अपने उत्तम व्यवहार द्वारा विदेश में सर्वत्र फैलाओ और वहाँ की टेक्नोलॉजी और सम्पन्नता से अपने देश की सेवा करो।”

धीरे-धीरे अनेक देशों में “श्री चन्दना विद्यापीठ” की स्थापना द्वारा संस्कृति और स्वाध्याय के कार्यों का प्रारम्भ हुआ। उनके कार्यों का मुख्य मंत्र है शिक्षा, सेवा और साधना। शिक्षा से बौद्धिक शक्ति आती है। उसमें भी मूल्यवर्धन शिक्षा के नये आयामों को सृजित किया। सेवा से परमार्थवृत्ति जगती है और साधना से आन्तरिक शक्ति को बल मिलता है। इन तीनों सिद्धान्तों के साथ वीरायतन का बीज धीरे-धीरे वृक्ष और वटवृक्ष बन गया। आज नेपाल, अमेरिका, इंडिया, कनाडा, थाईलैण्ड, कोरिया जैसे बीस देशों में वीरायतन साध्वी संघ द्वारा रचनात्मक कार्य हो रहे हैं।

धर्म को मात्र उपदेश ग्रन्थों में या वाणी में सीमित न रखकर जब-जब मानवजीवन पर प्राकृतिक आपदा आयी तब मानवता की पुकार सुनकर प्रेरणादायी राहतकार्य किये। कच्छ में जो कार्य उन्होंने किया है वह उत्कृष्टतम् कार्य है।

2001 के भीषण धरती कम्प के समय वीरायतन ने जो कार्य किया है वह मात्र भोजन

या आवास देकर अपने कार्य की इतिश्री नहीं की। किन्तु कच्छ में एक विशाल शिक्षण संकुल का सृजन किया। जिसने मात्र शिक्षा ही नहीं किन्तु सेवाकार्य भी सम्पन्न किये। दूर के विद्यार्थियों हेतु हॉस्टल, 36 जितने विविध प्रकार के व्यवसायी कोर्स द्वारा कच्छ के 12000 जितने लोग स्वनिर्भर बने। धरती कम्प के समय तो दस हजार से अधिक बच्चों की व्यवस्थावाली स्कूल्स का निर्माण किया था जो धरती कम्प के बाद अधिकाधिक विस्तृत होता गया। और आज कच्छ में फार्मेसी, इंजीनियरिंग, कम्प्यूटर एप्लीकेशन आदि कॉलेजिज निर्मित हुए हैं।

वीरायतन के इस स्वर्ण जयन्ति के अवसर पर जो सेवा, शिक्षा और साधना के कार्य अंकित हुए हैं तो विशेष यह है कि केवल राजगृह के वीरायतन ने उसे विस्तृत आकाश दिया है। देश-विदेश में कितने ही वीरायतन याने तीर्थकर महावीर के अहिंसा और मैत्री को व्यापक सन्दर्भ में व्यक्त करते पवित्र स्थान निर्मित किये हैं। जो जाति, धर्म, सम्प्रदाय से परे हैं। जब महावीर के सिद्धान्त सबके लिए हैं तब वीरायतन सर्वजन हिताय हो यह स्वाभाविक है। और आज वीरायतन सर्वजन की सर्वांगीन उन्नति का अलख जगा रहा है।

**-कुमारपाल देसाई के गुजराती लेख का अनुवाद**



## अंकुर ने लगाई छलांग

-आचार्य चन्दना

बीज से प्रोत्साहन पाकर अंकुर ने बचानेवाला नहीं। ओह! अब क्या होगा? विचार आया कि जहाँ था वहीं अच्छा था। अंधेरा ही सही, लेकिन सुरक्षा तो थी, सहारा था, आराम था। बीज तो वहाँ बढ़े मजे से बैठा है और मैं यहाँ भयावह संकटों से घिरा हूँ।

हिम्मत जुटाकर उसने बीज को पुकारा और कहा, तुम तो निश्चिन्त होकर धरती की गोद में आराम कर रहे हो और मुझे भेज दिया ऊपर कि जाओ विकास करो। क्या तुम्हें पता है कि पृथ्वी पर कितने संकट है, कितनी भयानक है यह दुनिया? मेरी छोटी -सी कोमल काया और चारों तरफ विकराल दुनिया। कैसे मैं अपना अस्तित्व सुरक्षित रख सकुंगा? कैसे विकास कर पाऊंगा? तब भीतर ही भीतर अपनी वात्सल्य रस की धाराओं को बहाते हुए और अपनी पूरी शक्ति का उसे मधुर रसपान कराते हुए, बड़ी मृदुता से किन्तु दृढ़ता के साथ बीज ने कहा, वत्स! घबराओ नहीं। आज तो मैं तुम्हारे साथ हूँ पर यह जान लो कि तुम्हारे अन्दर इतनी क्षमता है कि आनेवाले समय में तुम्हें मेरे भी सहयोग की जरूरत नहीं रहेगी।

इन्हीं विचारों में मस्त था। मुग्ध होकर अपनी नहीं आंखों से चतुर्दिक् देख रहा था, आश्चर्यचकित था, आनन्द विभोर था। मुहूर्त भी नहीं बीता और उसने सृष्टि में होते परिवर्तनों को महसूस किया। सूरज की किरणें ताप देने लगी, हवाएँ गर्म होकर तेजी से धक्के मारती हुई चलने लगी और देखा कि उससे कई गुण लम्बे-चौड़े पशु उसकी ओर मानो उसे निगल जाने के लिए चले आ रहे हैं। डर के मारे वह कांपने लगा। कहीं कोई सहारा नहीं, कोई

और तुम बाहर- भीतर दोनों ओर विकास करोगे।”

माना कि वहाँ प्रश्न कम नहीं है। हर समय चुनौतियाँ हैं, संघर्ष हैं। उन सबका समाधान तुम्हें स्वयं खोजना होगा पुत्र! प्रश्नों से परेशान हो जाओगे या रुक जाओगे, घबराकर पीछे हटने की निराशा में डूब जाओगे तो निश्चित है कि विकास के द्वार बन्द हो जायेंगे। गति रुक जायेगी। नहीं, रुकना नहीं है।

अतः सामना करो चुनौतियों का क्योंकि हर नई पीढ़ी को समाधान खोजने होते हैं। वह प्रश्न खड़े करने के लिए नहीं, समाधान देने के लिए है।

जो मुझे देना था, मैंने दिया। अब आगे तुम्हें सम्भालना है। वत्स! नये से पुराना होना और पुराने से नये का जन्म होना यही सृष्टि का नियम है। नये को आगे से आगे बढ़ते रहना है। अतः बढ़ो, और बढ़ते चलो। निर्भय होकर विकास की ओर गतिमान रहो। आशीर्वाद।

## मन बदल देती है 'ताई माँ की वाणी'

परम आदरणीय पद्मश्री आचार्यश्री डॉ. चन्दनाश्रीजी एवं सभा में उपस्थित प्रबुद्ध जन

जैसे श्री कृष्ण अपनी पूजा करवाने पृथ्वी पर अवतार नहीं लेते वह तो अर्जुन के हारे मन को कर्मयोग का संदेश देने, डगमगाते “सुदामा” जैसे मित्रों को दृढ़ आधार देने और पापियों से धर्म की रक्षा करने को धरती पर अवतरित होते हैं।

इसी प्रकार आचार्यश्री जी जैसी गुरु अपने कर्मयोग से मानव धर्म निभाने, “सेवा-शिक्षा-साधना” से जन-जन का उद्धार करके, निर्बल को सबल बनाने का व जैन धर्म की प्रतिष्ठा बढ़ाकर मानव धर्म निभाने धरती पर आई हैं।

मेरठ-वीरायतन नत मस्तक है उनके पावन चरणों में, उनका हर शब्द वेद वाक्य की तरह होता है। पर कुछ शब्द मेरे मन की गहराईयों तक समाये हैं— मैं भक्त नहीं - मित्र बनाती हूँ।

“मित्र हरदम देना चाहता है और भक्त मांगना”

आज आपके ही आशीर्वाद से, मेरठ-वीरायतन सेवा कार्यों में संलग्न है और निरंतर आगे बढ़ रहा है।

‘अभिनंदन समारोह’ के शुभ अवसर पर ‘जन-जन की भावना है पद्मश्री अवार्ड से सुशोभित श्री ताई माँ दीर्घायु हो और उनका आशीर्वाद हम सब पर बना रहे।’

—कीमती लाल जैन, वीरायतन-मेरठ



**पद्मश्री डॉ. कुमार पाल देसाई का  
ताई माँ द्वारा सम्मान**

**पूज्य ताई माँ द्वारा लिखित 'मेरे देवदूत'  
पुस्तक - द्वितीय आवृति का विमोचन**



**वीरायतन स्वर्ण जयंति महोत्सव पर  
वीरायतन कच्छ के बच्चों द्वारा आकर्षक सांस्कृतिक प्रस्तुति**





**soapytwist**  
Be Naturally Creative  
**The Soap Crafters**

5245, Chowk Bara Tuti, Sadar Bazar, Delhi-110006  
Email : [info@soapytwist.com](mailto:info@soapytwist.com) Website : [www.soapytwist.com](http://www.soapytwist.com)

#### C. R. Kothari & Sons Group of Companies

Members : NSE BSE MCX MCXSX - DP-CDSIL  
Core Presence in : Capital Markets, Depository Participants,  
Advisory Services Commodities, Green Energy, Logistics  
Offices : Mumbai Vadodara Jaipur Ajmer



Garments



T.T. LTD. : E-mail: [export@tttextiles.com](mailto:export@tttextiles.com)  
Web. : [www.tttextiles.com](http://www.tttextiles.com)

**Guru Bhakt**  
Chennai

